मानव जीवन विकास समिति
वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन
वर्ष 2014–15

ग्राम बिजौरी पोस्ट मझगवां जिला कटनी म.प्र.

फोन नं. 07626–275223, 275232

E-mail:mjvskatni@gmail.com

website. www.mjvs.org.in

अनुक्रमणिका

क्रं.	विषय	पृष्ठ क्रं.
1.	दो शब्द /आभार	3
2.	संस्था का परिचय	3–4
3.	पृष्ठभूमि, विजन एवं मिषन	5
4.	उद्देष्य	6
5.	समिति के दस स्तम्भ	6–7
6.	कार्यक्षेत्र	7
7.	समिति की प्रमुख गतिविधियाँ – • **महाकौषल – संगठनात्मक, पदयात्रा, कपड़ा** • **द हंगर प्रोजेक्ट – महिला नेतृत्व प्रषिक्षण** • **नवांकुर –** 1. स्वास्थ्य, 2. षिक्षा, 3. पर्यावरण सरंक्षण, 4. जल संरक्षण, 5. ऊर्जा संरक्षण, 6. नषामुक्ति, 7. समग्र स्वच्छता एवं साफ सफाई, 8. कुपोषण एंव परिवार नियोजन, 9. हरियाली एवं कृषि • **डाबर – मधुमक्खी, जड़ीबूटी, नर्सरी** • **एन.सी.व्ही.टी. प्रषिक्षण** • **प्रदर्षनी – तिल्दा, मुम्बई** • **आपातकालीन सहायता – शैक्षणिक फण्ड, बिमारी सहायता** • **कृषि विकास – सेंटर, सन्नई, चीलघाट** • **रूरल टूरिज्म प्रोग्राम – टूरिष्ट, गांव विकास** • **स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम** • **नषामुक्ति कार्यक्रम** •	8–28
8.	समिति की अन्य गतिविधियां	29–30

1. दो शब्द .....

एक छोटे से गांव बिजौरी मझगवां से अपने काम को धीरे–धीरे आगे बढ़ाने की प्रक्रिया मे मानवप जीवन विकास समिति आगे बढ़ रही है। ग्रामीण का सहयोग, कटनी शहर मे रहने वाले बुद्धिजीवी, मीडिया बन्धु, नेता, राजनेता, व्यापारी वर्ग, समाजसेवी संस्थाओं का जो ताकत व सहयोग दिया है और दे रहे है। इससे समिति को अपने कार्य को बढ़ाने व मजबूत करने मे ताकत मिलती है।

परम्परागत खेती किसानी, पंचायत राज मे निर्वाचित महिला जनप्रतिनिधियों व नव जवान साथियोंके साथ मिलकर कौषल विकास कार्यक्रम चलाने स्थानीय स्तर पर उपलब्ध संसाधनों का सही प्रबंधन के साथ लोगों को अपने पैरों मे खड़ा होने लायक माहौल व साधन उपलब्ध कराना, जिसमे जड़ी–बूटी का संग्रह व संवर्धन तथा मधुमक्खी पालन जैसे कार्यक्रमों को प्राथमिकता के साथ करना इसके अलावा महाकौषल क्षेत्र मे बैगाओं के लिए मषहूर बैगा कपड़े को बाजार उपलब्ध कराना तथा इस काम मे लगे पनिका समाज को इस हेतु प्रेरित करना भी प्रमुख रूप से समिति कार्य कर रही है।

अपने सीमित संसाधनों व ग्रामीण नव जवान साथियोंकी एक कुषल टीम के द्वारा सरकारी योजनाओं का सही क्रियान्वयन हो इस हेतु प्रयासरत है। ट्रेनिंग सेंटर मे लोगों के आने जाने अतिथियों का विषेष ध्यान देते हुए गरीमा प्रोजेक्ट के नाम से रूरल टूरिज्म को बढ़ावा देने मे भी अग्रसर है।

2. संस्था का परिचय :–

महाकौषल अंचल के पिछड़ी जनजाति बैगा एवं अन्य समुदाय के जीवन व भोजन के लिए परियोजना के उद्देष्य से भूमि आधारित अर्थव्यवस्था को विकसित करने हेतु परियोजना का संचालन द्वारा संचालित किया गया है। समुदाय के मध्य जीविकोपार्जन के संसाधन जल, जंगल और जमीन पर लोगो के परम्परागत अधिकार की पुनर्स्थापना के जमीनी स्तर पर प्रेरक कार्यो को मजबूत बनाने के लिए व्यापक रूप से शासन एवं प्रषासन स्तर मे दबाव बनाने हेतु रचनात्मक कार्य करने का मुख्य उद्देष्य रहा है वनाधिकार अधिनियम को कार्यक्षेत्र मे लागू कराने हेतु पंचायत प्रतिनिधि एवं प्रशासन के साथ संवाद स्थापित कर दबाव बनाना एवं साथ ही नेतृत्व क्षमता का विकास करने हेतु समय–समय पर प्रषिक्षण एवं सम्मेलन, एक्सपोजर विजिट जैसे कार्यक्रम का आयोजन करना तथा समुदाय के अर्थव्यवस्था को विकसित करने हेतु स्वसहायता समूह, परस्पर सहयोग समूह को बैंक से जोड़कर बैंको से सहायता प्राप्त कर आर्थिक कार्यक्रम चलाना भूमि सुधार, जलसंरक्षण ग्रामीण अर्थव्यवस्था की पुनः संरचना परियोजना आधारित कार्य दस्तावेजीकरण एवं जनवकालत कार्यक्रम संचालित कर समुदाय के जीवन स्तर को सुद्वढ़ बनाने के लिये कार्यक्षेत्र मे जमीनी स्तर पर प्रेरक के रूप मे कार्य किया गया है।

ट्रेनिंग सेन्टर :– संस्था के पास 30 एकड़ भूमि है। इसी भूमि पर संस्था का कार्यालय 2 कमरों पर है, प्रषिक्षण हाल है जिसमे लगभग 200 लोगों को बैठाकर प्रषिक्षण दिया जा सकता है, एक छोटा प्रषिक्षण हाल है जिसमे 30 लोगों को बैठका प्रषिक्षण दिया सकता है, अतिथि भवन जिसमे 4 कमरे अटैच है, आवासीय भवन 2 बड़े हाल है जिसमे 100 लोगों को रूकाया जा सकता है एवं 5 छोटे कमरे जिसमे 50 लोगों को रूकाया जा सकता है, किचिन के बाजू से टीन सेड बना है जिसमे 200 से 250 लोगों को बैठाकर भोजन कराया जा सकता है तथा किचिन कक्ष भी उपलब्ध है, स्टॉफ रूम तथा महिला रूम अलग से है ।

मानव जीवन विकास समिति मे उपलब्ध सुविधायें				
क्र	साधन	संख्या	संसाधन	विवरण
1	आवासीय	1	हाल 60X20 फीट	150 लोगों के बैठने की क्षमता दरी बिछाकर
		2	गेस्ट रूम	2 रूम अटैच 4 लोगों की क्षमता
		3	कमरा	7 रूम एक कमरे मे 17 लोगों की क्षमता
		4	डेमोटरी महिला	20 लोगों की क्षमता अटैच
		5	डेमोटरी पुरूष	20 लोगों की क्षमता अटैच
		6	लैट्रिंग बाथरूम	अटैच कमरों को छोड़कर बाहर
				लैट्रिंग रूम–8, बाथरूम–8
		7	ज्ञानमंदिर	10 लोगों की सोने की क्षमता व 20 लोगों की बैठक व्यवस्था
		8	एलवेस्टर सेड	30 बाई 60 फिट
2	आवसीय व्यवस्था	1	गद्दा रजाई सेट	150 नग
		2	सिनटेक्स टंकियां	5 नग
		3	ट्यूबवैल	1 नग
		4	कुंआ	2 नग मोटर सेट के साथ
		5	जनरेटर	1 नग
		6	दरी	15 नग छोटी बड़ी सहित
3	भोजन व्यवस्था		खाना बनाने, बर्तन के साथ परछाई मे बैठकर खाने की सुविधा 150 लोगों के	
4	आफिस सेक्टर	1	डिस्कटॉप कम्प्यूटर	6
		2	प्रिंटर	2
		3	लैपटॉप	2
		4	स्कैनर	1
		5	टेबिल कुर्सी	10 सेट
		6	अलमारी	4 नग
		7	इंटरनेट सुविधा	
		8	इनवर्टर सुविधा	
		9	कुर्सी फाईवर	26
		10	कुर्सी तांत वाली (बुनाई वाली)	7
		11	कुर्सी लोहे वाली	1
		12	कुर्सी लकड़ी वाली	2
		13	कुर्सी व्हील	2
		14	कुर्सी कम्प्यूटर वाली	3
		15	BSNL&AIRTEL मोबाईल की कनेक्टिविटी उपलब्ध	
5	आवागमन के साधन	1	मोटर साईकिल	2
		2	साईकिल	6
		3	टेम्पोट्रेवल्स	1
		4	ट्रेक्टर ट्राली सहित	1

3. पृष्ठभूमि –

मध्य प्रदेष की उत्तरी पूर्वी दिषा में जबलपुर सम्भाग का कटनी जिला बुन्देलखण्ड, बधेलखण्ड या महाकौषल क्षेत्र के अर्न्तगत आता है। जिले का प्रमुख भाग सोन तथा महानदी के कछार मे है। टमस नदी का उद्गम स्थल कैमोर की पहाडियों तथा विध्यांचल की पहाडियों से घिरा यह क्षेत्र षुष्क पतझड़ वाले वनों से आच्छादित है। इस क्षेत्र मे विंध्य शैल समूह की चटटानें पाई जाती हैं। यहाँ बॉक्साइट, चूने तथा सीमेन्ट का पत्थर और संगमरमर का यहाँ प्रचुर भण्डार हैं। सोन तथा महानदी के कछार की रेत का व्यापार बडी मात्रा में किया जाता है। बघेलखण्ड के क्षेत्र में मुख्य रुप से कोल, गोंड, भूमिया, बैगा तथा आदिवासी जातिया रहती हैं। पूरे क्षेत्र में लगभग 40 प्रतिषत कोल आदिवासियों का निवास है इसलिए इसे आदिवासी क्षेत्र माना जाता है। इनके अतिरिक्त सामान्य, दलित एवं पिछडा वर्ग के भी लोग निवास करते हैं।

पठारी तथा आदिवासी क्षेत्र होने के बावजूद यहॉ पारम्परिक तरीके से खेती नहीं की जाती। रासायनिक खाद तथा कीटनाषक रासायनों का उपयोग अधिक किया जाता है। यह क्षेत्र गेहूँ, चना, मसूर तथा दलहनों के उत्पादन के लिए प्रसिद्व रहा है। कोयले की खदानों के कारण सब्जियों का उत्पादन भी प्रचुर मात्रा मे होता है। जिले की सीमा पर बाणसागर बॉध बनने के कारण यहॉ की खेती और वनों पर इसका विपरीत प्रभाव हुआ है। पास के जिले उमरिया में टाइगर प्रोजेक्ट के अन्तर्गत बॉधवगढ राष्ट्रीय अभ्यारण्य बनाया गया है जिसके कारण वन में रहने वाले आदिवासियों का जीवन प्रभावित हुआ है। इस क्षेत्र से लगे हुए वनों में किसी समय सफेद शेर पाये जाते थे । साल, सागौन , हर्रा तथा तेंदू यहाँ की मुख्य वनोपज है।

सामाजिक कुरीतियों तथा परम्परागत रुढियों से आज भी समाज मुक्त नही हुआ है। सामाजिक दृष्टि से महिलाओं और बच्चों की स्थिति शोचनीय है। बाल मजदूरी तथा महिलाओं द्वारा खेतिहर मजदूरी जीविका का साधन है। लोगों की आर्थिक स्थिति कमजोर है। षिक्षा का अभाव है तथा उसके प्रति जागरुकता भी नहीं है। महाकौषल क्षेत्र भौगोलिक रूप से जंगली, उबड़–खाबड़, पहाड़ी इलाका है, जिससे यहां की आजीविका वन उपज और वर्षा आधारित खेती पर निर्भर बैगा समुदाय जिन्हें राष्ट्रीय मानव का दर्जा प्राप्त है वह बैगा बाहुल्य क्षेत्र आज विलुप्त होने के कगार पर है।

3.1. – संस्था का विजन एवं मिशन –

दृष्टि (Vision) : – गरीबी उन्मूलन की दिषा में प्राकृतिक संसाधनों के प्रबन्धन पर क्षमता वृद्वि कर जीवकोपार्जन के साधन खडे करना ।

लक्ष्य (Mission) : – प्राकृतिक संसाधनों के प्रबन्धन को सुचारू रूप से संचालित कर गरीबी उन्मूलन की दिषा मे आगे बढ़ना जिससे समाज मे स्वच्छता, रचनात्मक कार्यों की क्षमता का विकास हो। स्वरोजगार की दिषा मे प्रषिक्षित होकर स्वांलम्बी समाज का निर्माण करना ।

4. उद्धेष्यः— (समिति निम्न उद्धेश्यों पर कार्य करती है)

- प्रषिक्षण – (जैविक कृषि, वृक्षारोपण, नर्सरी एवं जड़ी बूटियों का संग्रह एवं संवर्धन का क्षेत्र में प्रचार प्रसार ।
- वन अधिकार अधिनियम। वनवासियों को वन तथा वनोपज के लिये उचित अधिकार दिलाना।
- पंचायतीराज मे महिला सषक्तिकरण कार्यक्रम। समाज में महिलाओं को सम्मान तथा अधिकार दिलवाने के लिये षिक्षा तथा ज्ञान का प्रचार प्रसार कर उनकी समझ विकसित करना।
- षिक्षा (एक घुमक्कड़ जनजाति के बच्चों का स्कूल) बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिये प्रयास करना।
- स्वास्थ्य (जिला स्वास्थ्य विभाग से मान्यता प्राप्त) ब्लॉक एम.जी.सी.ए. सदस्य के रूप मे कार्य कर रहे है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में परस्पर सहयोग की भावना से समूहों का निर्माण कर संचालन व प्रषिक्षण के प्रयास करना । (स्व–सहायता समूहें का निर्माण एवं संचालन)
- संगठनात्मक बैठक।
- रोजगारोन्मुखी प्रषिक्षण (NCVT) से मान्यता प्राप्त ।
- स्थानीय संसाधनों पर लोगों का अधिकार एवं प्रबन्धन।
- विलेज टूरिज्म।
- जन अभियान परिषद् के नवांकुर योजना के तहत् ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति क्षमतावर्धन प्रषिक्षण आयोजित करना।
- सामाजिक कल्याण के लिये अन्याय एवं शोषण के विरूद्ध लोक चेतना जागृत करना।
- पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त कर उसके संरक्षण के प्रयास करना।
- स्थानीय कला एवं संस्कृति का संरक्षण एवं अभिवृद्धि।
- रचनात्मक कार्यों की सहायता से समाज परिवर्तन की दिषा में कार्य करना।
- षिक्षण और प्रषिक्षण के द्वारा युवाओं की आजीविका सम्बन्धी समस्यायों के समाधान का प्रयास करना।
- समाज में गांधी विचार का प्रचार प्रसार कर शांति, अहिंसा और प्रेम की भावना जागृत करना।
- गावों में एकजुटता की भावना लाकर सत्य अहिंसा पर आधारित समाज निर्माण हेतु सार्थक पहल कराना ।

5. समिति के दस स्तम्भ –

1. **हमारा आर्थिक** –परावलम्बी समाज से स्वावलम्बी समाज निर्माण के सिद्धान्त पर चलते हुए प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन पर आधारित अहिंसक समाज रचना में लगे समुदाय का निर्माण ताकि भूखमुक्त समाज की रचना हो सके।
2. **हमारी राजनीतिक** – लोक आधारित लोक उम्मीदबार के सिद्धान्त पर लोकनीति के अनुसार चलने के लिए लोगों को खड़ा करना ताकि सही अर्थो में लोकतंत्र की स्थापना की जा सके।
3. **हमारी षिक्षा** – समग्र विकास पर आधारित ज्ञान का प्रचार प्रसार एवं स्कूली बच्चों के सर्वांगीण विकास के साथ–साथ रोजगारोन्मुखी षिक्षा देना ताकि बेरोजगारी की समस्या का उन्हे सामना न करना पड़े।

4. **हमारा समाज**–अखण्डता,सम्प्रभुता,समभाव परस्पर भाईचाारे के साथ–साथ एकता,समानता, सामूहिकता एवं न्याय पर आधारित समाज जिसमें ऊंच–नीच, अगड़े–पिछड़े जाति आधारित भेदभाव न हो।
5. **हमारी संस्कृति** – स्थानीय लोक कला एवं संस्कृति के कलाकारों को संगठित कर पुनर्जीवित करना उनका संवर्धन एवं संरक्षण कर वातावरण उपलब्ध करवाना।
6. **हमारी कृषि** –लम्बे समय तक भूमि की उत्पादन क्षमता बनाये रखने वाली खेती को प्रोत्साहन देकर पारम्परिक ढ़ग से खेती कर रहे किसानों का उत्साह बढ़ाना ताकि वे कृषि की रीति नीति का विकास कर सके।
7. **हमारा सषक्तिकरण** – गरीबी झेल रहे दीन दुःखी जो अपाहिजों जैसा जीवन जीने के लिऐ विवष हैं। समाज में विद्यमान ऐसे स्त्री पुरूषों के प्रति असमानता और उपेक्षा को दूर कर समानता का दर्जा दिलवा कर शोषण, अत्याचार एवं भ्रष्टाचार से मुक्त सषक्त सामाजिक ढ़ांचे का निर्माण करना।
8. **हमारा परिवेष** – स्वच्छ व स्वस्थ वातावरण का निर्माण करना जहाँ हिंसा, लूटपाट, वैमनस्यता, दुराचार तथा तेरे मेरे लिए कोई स्थान न हो।
9. **हमारा सहयोग एवं मित्रता** – परस्पर सहयोग की भावना को पुनर्जीवित कर एक दूसरे की सहायता व मित्रता को बढ़ावा देना ताकि पूरा गांव और समाज अपनी समस्याऐं आपसी सहयोग व मित्रता के आधार पर सुलझा सकें।
10. **हमारी संस्था** – उपरोक्त विचारों के क्रियान्वयन के लिऐ तथा समाज कल्याण के काम का विकास करने में संस्था एक मजबूत आधार स्तम्भ है।

6. कार्यक्षेत्र –

क्रं.	जिला	ब्लॉक	गांव
1	कटनी	बड़वारा	120
		ढ़ीमरखेड़ा	15
2	डिण्डौरी	समनापुर	40
		बजाग	20
3	मण्डला	बिछिया	10
		मवई	10
4	बालाघाट	बैहर	30
5	उमरिया	मानपुर	05
6	रायसेन	ओबेदुल्लागंज	05
कुल	**6**	**09**	**255**

उपरोक्त कार्यक्षेत्र के अलावा स्कॉलरषिप, एकता लोक कलां मंच, भूमि अधिकार अभियान शोध, नेषनल एडवोकेसी एवं नेटवर्किंग, स्थानीय प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन आदि विषयों पर भी संस्था कार्यकर्ताओं के द्वारा काम कर रही है ।

7 . समिति की प्रमुख गतिविधियाँ – संस्था द्वारा आयोजित गतिविधियां निम्न है।

7.1 महाकौषल – संगठनात्मक, पदयात्रा, कपड़ा –

न्याय, शांति और सम्मान के लिए आदिवासी अधिकार पदयात्रा
दिनांक – 20 नवंबर से 10 दिसंबर, 2014
मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ –
जिले – डिंडोरी, मंडला एवं बालाघाट (मध्यप्रदेश) और कबीरधाम (छत्तीसगढ़)

परिचय – एकता परिषद पिछले 25 साल से जल, जंगल एवं जमीन के मुद्दे पर आदिवासी एवं वंचित समुदायों के लिए देश के 15 राज्यों में कार्यरत है। पद यात्रा, अहिंसक आंदोलन एवं जन पैरवी एकता परिषद की पहचान है। स्थानीय संसाधनों पर आदिवासियों एवं वंचित समुदाय के अधिकार को सुनिश्चित करते हुए उनकी आजीविका को स्थाई बनाए रखने और उन्हें गरीबी से बाहर लाने के लिए एकता परिषद अहिंसक आंदोलन पर जोर देता है। विभिन्न जनसंगठनों एवं स्वैच्छिक संस्थाओं के सहयोग से विमर्श एवं आंदोलन को विस्तार देते हुए एकता परिषद ने जनादेश 2007 एवं जनसत्याग्रह 2012 जैसे व्यापक आंदोलन भी किए हैं। अहिंसक आंदोलन के विभिन्न तरीकों को अपनाते हुए वह देश के कई राज्यों में गरीब समुदाय को न्याय और आर्थिक एवं राजनीतिक अधिकार दिलाने के लिए प्रयासरत है, जिससे कि समाज में शांति की स्थापना हो सके और आर्थिक एवं राजनैतिक गैर बराबरी दूर हो सके। अलग–अलग राज्यों में अलग–अलग समय पर निकाली गई पद यात्राओं के परिणाम भी देखने को मिले हैं, पर उन परिणामो ं के बावजदू समग्र बदलाव एवं बड़े स्तर पर नीतिगत बदलाव के लिए आगे और काम किए जाने हैं। एकता परिषद द्वारा आयोजित किए गए व्यापक आंदोलन जनादेश 2007 और जनसत्याग्रह 2012 के परिणाम कुछ व्यापक रहे हैं। जनोदश 2007 के बाद भूमि सुधार परिषद का गठन किया गया और आदिवासियों के साथ हुए ऐतिहासिक अन्याय को खत्म करने के लिए वन अधिकार कानून बनाया गया, पर इसके बावजूद आदिवासियों एवं अन्य वंचित समुदायों को पूरी तरह न्याय नहीं मिल पा रहा है। 2007 के आंदोलन के बाद एकता परिषद ने 2012 में 'जनसत्याग्रह 2012' आयोजित किया, जिसमें 2 अक्टूबर 2012 को ग्वालियर से दिल्ली के लिए एक लाख लोग कूच किए और आखिरकार केंद्र सरकार को जनसत्याग्रहियों के साथ समझौता करना पड़ा। वंचितों एवं आदिवासियों के हित में उनके आजीविका एवं संसाधनों पर अधिकार के लिए एकता परिषद की एक पुरानी मांग भूमि सुधार नीति बनाने पर केंद्र सरकार ने सहमति दी। इसके साथ ही अन्य कई महत्वपूर्ण मसलों पर केंद्रीय ग्रामीण विकास मंत्री जयराम रमेश एवं एकता परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजगोपाल पी.व्ही. के बीच समझौते पर हस्ताक्षर हुआ। उपरोक्त संदर्भों में एकता परिषद ने यह निर्णय लिया कि संगठन के आंदोलन, जनपैरवी एवं संवाद के माध्यम से आदिवासी एवं वंचित समुदायों के लिए बनाए गए कानूनों, नीतियों एवं योजनाओं की जमीनी हकीकत को गहनता से समझने के लिए समुदाय के साथ संवाद किया जाए और स्थानीय प्रशासन के साथ भी संवाद कर उन्हें जमीनी हकीकत से अवगत कराया जाए। यह प्रक्रिया पदयात्रा से ही संभव है और इसे ध्यान में रखते हुए मध्यप्रदेश के डिंडोरी के चांड़ा से छत्तीसगढ़ के कबीरधाम जिले के कवर्धा तक न्याय, शांति और सम्मान के लिए आदिवासी अधिकार पदयात्रा का आयोजन किया गया।

उद्देश्य

1. आदिवासी और वंचित समुदाय के न्याय, शांति और सम्मान के लिए समाज और सरकार के साथ संवाद करते हुए उनके अधिकारों के लिए संगठित प्रयास करना।
2. मौजूदा कानूनों, जैसे – वन अधिकार कानून, पेसा, भूमि अधिग्रहरण कानून, खाद्य सुरक्षा कानून आदि के संदर्भ में जमीनी हकीकत को समझना।
3. स्थानीय संसाधन पर आदिवासी का अधिकार, पर्यावरण सुरक्षा, प्राकृतिक संसाधनों को कारपोरेट कंपनियों के हवाले करना जैसे गंभीर सवालों को समुदाय के बीच ले जाना और समुदाय की प्रतिक्रिया को समझना।

4. समुदाय को संगठित करना, जिससे कि कानूनों के बेहतर क्रियान्वयन के लिए सरकार पर दबाव डाला जा सके और जरूरत पड़ने पर आंदोलन किया जा सके।

महत्वपूर्ण तथ्य –

राज्य मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ जिला डिंडोरी, मंडला एवं बालाघाट (मध्यप्रदेश) और कवर्धा (छत्तीसगढ़) दिन 21 (12 दिन मध्यप्रदेश एवं 9 दिन छत्तीसगढ़) पदयात्रा पड़ा व 38 गावं (21 मध्यप्रदेश एवं 17 छत्तीसगढ़) कुल दूरी 262 किलोमीटर (172 किलोमीटर मध्यप्रदेश में एवं 90 किलोमीटर छत्तीसगढ़ में) संपर्क किए गए गांव 114 पंजीयन 4130 पदयात्री संपर्क संख्या 14,000 ग्रामीण स्थानीय सहयोग राशि कुल 36,722 रुपए स्थानीय अन्नदान (चावल, दाल, शक्कर) 3 क्विंटल 57 किलोग्राम स्थानीय ईंधन एवं अन्य सामग्री दान लकड़ी, दोना–पत्तल (लगभग 15,000 रुपए) लगातार चलने वाले पदयात्री 38

यात्रा के दरम्यान उभरकर आए मुद्दे

जमीन से जुड़े मुद्दे

- विशेष पिछड़ी जनजाति में चिह्नित होने के बावजूद कई गांवों में वन अधिकार कानून के तहत
- व्यक्तिगत दावा किए जाने के बावजूद जमीन नहीं मिलने की शिकायतें मिली।
- वन अधिकार कानून के तहत व्यक्तिगत दावों में जितना दावा उतनी जमीन नहीं मिलना।
- सामुदायिक वन अधिकार के बारे में जानकारी का अभाव दिखा एवं कई गांवों में दावा के बावजूद
- अभी सामुदायिक अधिकार नहीं मिला है एवं इसके बारे में लोगों को जागरूक नहीं किया जा रहा
- है।
- अन्य परम्परागत आदिवासियों का आवेदन स्वीकृत नहीं किया जाना।
- वन्यजीव कॉरिडोर के कारण होने वाले विस्थापन के प्रति लोगों में अनभिज्ञता है, जिसकी वजह से
- उनकी जमीनें छिन जाने की स्थिति बन गई है।
- आवंटित जमीन पर कब्जा होने के बावजूद सीमांकन नहीं किया जाना।
- पट्टे का कागज होने के बावजूद जमीन पर कब्जा नहीं होना।
- पट्टे की जमीन को सुधरवाने की मांग प्रशासन द्वारा अनसूनी करना।
- काबिज जमीन पर खेती के बावजूद वन विभाग द्वारा फसल चराई करवा देना।
- काबिज भूमि का पट्टा नहीं मिलना।
- भू–अंतरण नहीं होना।
- राजस्व भूमि का पट्टा नहीं मिलना।
- 60 साल से कब्जा के बावजूद वन विभाग द्वारा हस्तक्षेप जमीन पर हस्तक्षेप करना।
- जमीन का पट्टा नाम से होने के बावजूद वहां का कब्जा दूसरे का होना एवं इसकी शिकायत पर
- सुनवाई नहीं होना।
- वन अधिकार कानून के तहत किए गए दावे फार्म वाली फाइल गुम होना।
- डूब क्षेत्र में बाजार दर से काफी कम मुआवजा मिलना।
- जमीन से अतिक्रमण हटाने के नाम पर हल, बखर जप्त करना।

यात्रा का विवरण

चांड़ा की जन सुनवाई एवं आमसभा, 20 नवंबर 2014 (उद्घाटन) हजारों आदिवासियों ने किया न्याय, शांति और सम्मान के लिए शंखनाद

मध्यप्रदेष के सुदूर आदिवासी अंचल डिंडोरी के बैगा चक इलाके के चांड़ा में न्याय, शांति और सम्मान के लिए हजारों आदिवासियों ने राष्ट्रीय आदिवासी सम्मेलन में भाग लिया एवं एकता परिषद की अगुवाई में 21 दिवसीय आदिवासी अधिकार पद यात्रा की शुरुआत की गई। सबसे पहले विभिन्न गांवों से आए आदिवासियों ने अपनी समस्याओं को रखा और उस पर चर्चा की गई। इसके बाद एकता परिषद के अध्यक्ष एवं अन्य साथियों ने सभा को संबोधित किया। चांड़ा में आदिवासी समाज द्वारा प्रतिपादित पंचषील

घोषणा–पत्र को जारी किया गया, जिसे हजारों हस्ताक्षर के साथ सर्वोच्च न्यायालय, केंद्र एवं राज्य सरकारों और जिला प्रषासन को भेजने का निर्णय लिया गया।

आदिवासी समुदाय से जुड़े मसलों की जांच के लिए एक स्वतंत्र जांच समिति का जल्द हो गठन : राजगोपाल पी.व्ही.

यात्रा का नेतृत्व कर रहे एकता परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय भूमि सुधार परिषद, भारत सरकार के सदस्य राजगोपाल पी.व्ही. ने कहा कि आदिवासी समुदाय न्याय, शांति और सम्मान के लिए पहले संवाद करना

चाहता है। हम चाहते हैं कि आदिवासियों की समस्याओं का समाधान जल्द से जल्द किया जाए, इसके लिए सरकार केवल प्रतिबद्धता नहीं दिखाए, बल्कि इस पर अमल करे। श्री राजगोपाल ने कहा कि पूरे देष–दुनिया में आदिवासियों एवं वंचितों के साथ अन्याय हो रहा है। वे शांति से रहना चाहते हैं, पर उन्हें परेषान किया जा रहा है, उन्हें विस्थापित किया जा रहा है। वे सम्मान चाहते हैं, पर उन्हें अपमानित किया जाता है। वे अन्याय से मुक्ति चाहते हैं, कई फर्जी मामले में उन्हें फंसा दिया जाता है, उनकी जमीन छिनी जा रही है। आदिवासियों ने पहले भी संघर्ष किया है, जिसकी बदौलत थोड़ा–बहुत उन्हें सफलता भी मिली है, पर आज भी उनके साथ अन्याय जारी है, इसलिए एक बार फिर आदिवासी अधिकार पद यात्रा के माध्यम से हम संवाद के साथ–साथ अहिंसात्मक संघर्ष की जमीन तैयार कर रहे हैं। यात्रा के माध्यम से हमारी मांग है कि सरकार आदिवासी समुदाय से जुड़े सारे मसलों की जांच के लिए एक स्वतंत्र जांच समिति का गठन जल्द से जल्द करे। यात्रा के माध्यम से गांव–गांव की समस्याओं को सुनेंगे और उससे जुड़े तथ्यों को इकट्ठा करेंगे, जिससे कि सरकार के दावों एवं सुनी–सुनाई बातों के विपरीत हम तथ्यात्मक जानकारियों को सामने ला सकें।

बेहतर पुनर्वास के मुद्दे पर चुप है सरकार : राजगोपाल पी.व्ही.

एकता परिषद ने सरकार को इन मुद्दों पर टास्क फोर्स गठित करने का प्रस्ताव दिया था, पर अभी तक उस पर अमल नहीं हुआ है। इसमें मुख्य रूप से राष्ट्रीय उद्यानों के कारण होने वाले विस्थापन को लेकर नीति बनाने की बात की गई थी। कान्हा–बांधवगढ़ कॉरिडोर, श्योपुर का पालपुर कूनो के विस्तार के कारण हजारों आदिवासियों के समक्ष अजीविका का संकट आ गया है। अभी इसके कारण 29 गांवों पर विस्थापन का संकट आ गया है, पर बेहतर पुनर्वास को लेकर सरकार के पास कोई नीति नहीं है। ऐसे में इन परियोजनाओं की पूरी कार्ययोजना को ग्रामसभाओं में रखना एवं आदिवासी हित को संरक्षित करना जरूरी है और इसी कारण से आदिवासी समुदाय एवं वंचित समुदाय आंदोलन करने के लिए बाध्य है।

कवर्धा की जन सुनवाई एवं आम सभा, 10 दिसंबर 2014 (समापन)

न्याय, शांति एवं सम्मान के समर्थन में जुटे हजारों सामाजिक कार्यकर्ता

10 दिसम्बर को कवर्धा के अंबेडकर चौक पर मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के विभिन्न जिले से आए आदिवासी समाज के अधिकार के लिए मुखिया पंचायत का आयोजन किया गया, जिसमें हजारों की संख्या में आदिवासी के लोग शामिल हुए। 20 नवंबर को चांड़ा से शुरू की गई न्याय, शांति और सम्मान के लिए आदिवासी अधिकार पदयात्रा का समापन मानव अधिकार दिवस पर किया गया। सभा में उपस्थित समस्त ग्रामीण और सहयोगी संगठन के साथियों का आभार व्यक्त करते हुए पदयात्रा की औपचारिक समापन की घोषणा की गई। समापन समारोह में विभिन्न राज्यों से एकता परिषद एवं अन्य सहयोगी संगठनों के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया, जिसमें एकता परिषद के राष्ट्रीय संयोजक प्रदीप प्रियदर्शी, झारखंड समन्वयक रामस्वरूप, हरियाणा से विनोद शर्मा, दिल्ली से रमेश शर्मा, मुंबई से श्री यतीश भाई मेहता, बिहार से चंद्रशेखर भाई, आंध्रप्रदेश से आरिफ भाई, राष्ट्रीय जनवकालत समन्वयक अनीष कुमार, छत्तीसगढ़ के पीलाराम पटेल आदि वरिष्ठ साथियों ने भाग लिया। सभा के अंत में तय किया गया कि छत्तीसगढ़ क्षेत्र से निकलकर आए मुद्दों को स्थानीय जिला प्रशासन, स्थानीय सांसद एवं मुख्यमंत्री के साथ साझा किया जाएगा। दोनों प्रदेश के मुद्दों को दोनों राज्यों में राज्य स्तर पर एवं राष्ट्रीय स्तर पर उठाया जाएगा। सभा को एकता परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजगोपाल पी.व्ही. एवं एकता परिषद के अन्य वरिष्ठ साथियों के साथ–साथ राष्ट्रीय स्वाभिमान आंदोलन के छत्तीसगढ़ के संयोजक बसवराज पाटिल, छत्तीसगढ़ वित्त आयोग के पूर्व अध्यक्ष वीरेंद्र पांडेय, आदिवासी समाज के मुखिया शिकारी बैगा, नान्हू बैगा, समलिया बाई, हीरो बाई एवं बैगा विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष लमतू बैगा ने भी संबोधित किया।

आदिवासियों को अधिकार एवं सम्मान नहीं मिला तो होगा बड़ा आंदोलन : राजगोपाल पी.व्ही पद यात्रा के अंतिम पड़ाव पर एकता परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी.व्ही. राजगोपाल जी ने कहा कि चांड़ा से

चली इस आदिवासी अधिकार पद यात्रा को मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री और वहां के प्रशासन ने संपूर्ण समर्थन किया एवं स्थानीय समस्याओं को तत्काल निराकरण करने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया। वंचित समाज को हक और अधिकार नहीं मिलने की स्थिति में संगठन अगला कदम उठाते हुए छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में मुख्यमंत्री आवास के समक्ष सार्वजनिक उपवास एव ं कद्रें सरकार को घेरने आगरा से दिल्ली की ओर हजारो ं लोग कचू करेंगे।

आदिवासियों की आवाज को अनसूनी न करें सरकारें : डॉ. रनसिंह परमार

एकता परिषद के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. रनसिंह परमार ने सभी को आभार व्यक्त करते हुए कहा कि गांव–गांव से चलकर आए हजारों आदिवासी लोग मुख्यमंत्री के गृह जिले में इस उम्मीद के साथ आए थे कि प्रदेश के मुखिया माननीय डॉ. रमन सिंह उनकी आवाज को सुनेंगे और उनकी मूलभूत समस्याओं का गंभीरतापूर्वक समाधान करेंगे, पर उन्होंने ऐसा नहीं किया। सरकारें यदि आदिवासी समाज की आवाज को अनसूनी करती हैं, तो वे आदिवासी समाज द्वारा किए जाने वाले बड़े आंदोलनों का सामना करने के लिए तैयार रहें।

7.2 द हंगर प्रोजेक्ट – महिला नेतृत्व विकास कार्यक्रम – परिचय – कटनी जिला मध्य भारत मे मध्यप्रदेष राज्य के 50 जिलों मे से एक है। कटनी जिला मुख्यालय है जो जबलपुर डिवीजनल का हिस्सा है जो कि डिवीजनल हैड क्वार्टर से 90 किमी. की दूरी पर है। कटनी 28 मई 1998 में बनाया गया नया जिला है। यह मध्य भारत के महाकौषल क्षेत्र मे स्थित है। यह भारत का सबसे बड़ा रेलवे जंक्षन मे से एक है। कटनी जिले के रूप मे आने से पहले जबलपुर जिले की सबसे बड़ी तहसील थी।

मध्यप्रदेष देष का पहला राज्य है जहां सर्वप्रथम पंचायतीराज की स्थापना हुई। राज्य सरकार द्वारा महिलाओं को 50 प्रतिषत आरक्षण देने के बाद बड़ी संख्या मे महिला जनप्रतिनिधि के रूप मे चुनकर आई। राज्य मे आज भी सामन्तवादी प्रथाएं, रूढ़िवादिता तथा पुरूष प्रधान समाज है। जिसके कारण महिलाऐं घरेलु हिंसा, अन्याय और भेदभाव से ग्रसित है। संस्था द्वारा लगातार उनके षिक्षण, प्रषिक्षण तथा पंचायत चलाने एवं उनके कौषल को बढ़ाने का काम किया जा रहा हैं।

मानव जीवन विकास समिति कटनी जिले के बड़वारा ब्लाक मे वर्ष 2010 से महिला जनप्रतिनिधियों के सषक्तिकरण का कार्य कर रही है। 2014 मे बड़वारा ब्लॉक की 50 पंचायतों मे महिला जनप्रतिनिधियों के सषक्तिकरण का कार्य चलाया जा रहा है । स्वीप कैम्पेन के माध्यम से आगामी पंचायत चुनाव मे महिलाओं की सषक्त भागीदारी हो इसके लिए इसके लिए भी काम किया गया है ।

कार्यक्षेत्र का परिचय – कटनी जिले के बड़वारा ब्लॉक की 50 पंचायतों मे महिला जनप्रतिनिधियों एवं साझा मंच का निर्माण कर गांव एवं पंचायत स्तर की समस्याओं को हल कराने की पहल की जा रही है। मुद्दों को चयन कर पैरवी किया जा रहा है। आगामी पंचायत चुनाव पर महिला संघ की क्या भूमिका होगी तथा संगठन द्वारा क्या काम किया जायेगा। स्वीप अभियान को लेकर आगामी पंचायत चुनाव के सम्बन्ध मे लोगों अधिकतर महिलाओं को दलितों को जगाने का काम किया जा रहा है। संगठन के द्वारा गांव–गांव मे जाकर जागृत करने का काम किया जा रहा है।

कार्यक्षेत्र की 50 पंचायतों के 116 गांव मे 313 महिला जनप्रतिनिधि,
35 नई पंचायत मे महिला जनप्रतिनिधियों की संख्या- 220, पुरानी 15 पंचायत की महिला जनप्रतिनिधियों की संख्या- 93, साझा मंच की संख्या- 10 जिसमे महिलाओं की संख्या- 400 है, साझा समूह गठन- 5 पंचायत जिसमे महिलाओं की संख्या 200 है।
राशन दुकान - 15 पंचायतों मे 15 सरकारी राशन दुकान, आंगनवाड़ी - 15 पंचायतों मे 48 आंगनबाड़ी केन्द्र।

स्वीप अभियान – चुनावी प्रक्रियाओं मे महिलाओं की सषक्त भागीदारी।

(त्रिस्तरीय पंचायतीराज व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी को सुनिष्चित कर आगे बढाना।)

अभियान का बड़ा उद्देष्य है कि गाँव/समाज में लोकतांत्रिक सुषासन की स्थापना हो ताकि गाँव/समाज का विकास हो, गरीबों, आदिवासियों, दलितों, महिलाओं, को उनका अधिकार मिले। महिला सषक्तिकरण को मजबूत बनाना, लोकतांत्रिक प्रणाली को मजबूत करने के लिए लोगों को षिक्षित करना। निष्पक्ष, भयमुक्त व न्यायपूर्ण चुनाव सुनिष्चित कर पंचायत चुनाव मे दलित, वंचित व खासकर महिलाओं भागीदार बनाना। याद रखें 50 प्रतिषत आरक्षण के अलावा भी 'अनारक्षित' सीटों पर महिलाएं एवं पुरूष दोनो चुनाव लड़ सकते है। पंचायत के चुनाव में हिंसा और उत्पीड़न रोकने के लिए पहल करना। पंचायत चुनाव मे महिलाओं की सम्पूर्ण भागीदारी, सामूहिकता के साथ भयमुक्त वातावरण सुनिष्चित करना, चुनाव के समय

महिला एजेण्ट तैयार करना ताकी महिलाओं के साथ भेदभाव न हो । भयमुक्त वातावरण एवं माहौल बनाने के लिए काम किया गया।

अभियान की पहुंच – कटनी जिले के बड़वारा ब्लॉक की 50 पंचायतों के 116 गांव मे अभियान की पहुंच विकसित हुई।

महिला जनप्रतिनिधि	साझामंच महिला	अन्य महिला	पुरूष	सरकारी कर्मचारी	कुल
313	600	22795	11062	87	**34857**

अभियान की प्रक्रियायें –

- रैली, पोस्टर प्रदर्षनी, दिवाल (नारा) लेखन, पोस्टर/पम्पलेट वितरण, चुनाव सम्बन्धित आडियो, नुक्कड़ नाटक, माईक से एलाउंस, गीत, गाने, सफल कहानियां, चुनाव का डेमो प्रदर्षन।

अभियान विभिन्न स्टेकहोल्डर के साथ अनुभव

(i) प्रशासन –प्रषासनिक अधिकारी एवं कर्मचारियों से अभियान को लेकर बातचीत करते हुए बताया गया कि यह स्वीप अभियान चलाया जा रहा है जिसका उद्धेष्य है चुनावी समस्त प्रक्रियाओं मे महिलाओं की सषक्त भागीदारी सुनिष्चित करना। अभियान मे प्रषासनिक अधिकारियों एवं कर्मचारियों का विषेष सहयोग प्राप्त हुए। जनपद एवं तहसील कार्यालय से चुनाव प्रभारी को भी अभियान से जोड़ा गया एवं अभियान की जानकारी प्रषासन के माध्यम से जन–जन तक संदेष के रूप मे पहुंचाया गया। इसके अलावा भी रूचि लिया की गांव मे जाकर अभियान मे शामिल होकर लोगों को चुनाव की जानकारी देना एवं ई.व्ही.एम. मषीन का डेमो प्रदर्षन कर लोगों को वोटिंग करने की जानकारी दी गई। यह भी बताया गया कि आपको अपना मत आवष्य देना है आप सभी निष्पक्ष होकर मतदान करें। महिलाओं के अधिकार एवं आरक्षण की जानकारी भी दी गई तथा अनारक्षित सीट एवं खुली सीट के बारे मे विस्तार से बताया गया कि खुली सीट मे महिलाऐं भी भाग ले सकती है। स्वीप अभियान से निकलकर आया कि लोग अधिक से अधिक संख्या मे जागरूक हुए खासकर महिलाऐं इस काय्रक्रम से अधिक लाभान्वित हुई है।

(ii) मीडिया – स्वीप अभियान कार्यक्रम मे मीडिया का सहयोग बहुत ही सराहनीय रहा है जो कि कार्यक्रम को न्यूज पेपर मे छापकर जन–जन तक पहुंचाने का काम किया है। स्वीप अभियान से सम्बंधित बैठकें, रैली, प्रदर्षनी, संभावित महिला नेतृत्व कार्यषाला, सिमुलेषन कैम्प, फेडरेषन मीटिंग, महिला हिंसा विरूद्ध कैम्पेन आदि कार्यक्रमों मे मीडिया उपस्थित होकर न्यूज कवरेज के माध्यम से हाईलाईट करने का प्रयास किया है जिससे लोगों को जानकारी हुई साथ ही सरकारी दफ्तरों मे भी यह खबर छा गई की स्वीप अभियान कार्यक्रम चुनावी चक्र को लेकर चलाया जा रहा है जिसमे लोगों को पूर्ण रूपेण जानकारी से परिपक्व बना रहा है। बताया जाता है कि मीडिया ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा खबरों के माध्यम से जानकारी को सभी जगह पहुंचाया जा सकता है। और अधिक से अधिक लोगों को जोड़ने का काम कर सकता है। अखबार की खबर पढ़कर अधिक से अधिक लोगों का जुड़ाव हुआ ।

(iii) साझा मंच – स्वीप अभियान कार्यक्रम मे साझा मंच एक महत्वपूर्ण कड़ी है जो कि सहयोगी तंत्र के रूप मे अभियान से जुड़ा एवं अन्य लोगों को अधिकांष संख्या मे जोड़ने का काम भी किया है। स्वीप अभियान का संदेष जन–जन तक एवं गांव मोहल्ले के कोने–कोने तक पहुंचाने मे सहयोगी तंत्र की भूमिका साझा मंच निभाया है। साझा मंच की बहने स्वयं जागरूक हुई साथ अन्य महिलाओं को भी जागरूक करने का काम किया है। चुनावी दौर मे साझा मंच की महिलाओं ने अधिक संख्या मे प्रत्याषी, एजेण्ट, प्रस्तावक के रूप मे उभरकर सामने आयी है । यह संगठन एवं संस्था का महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जाता है।

(iv)अन्य NGO – स्वीप अभियान कार्यक्रम मे अन्य संस्थाओं के साथी भी शामिल होकर सहयोग प्रदान किया है खुद जुड़े एवं दूसरों को जोड़ने का काम किया है अभियान की रैली, प्रदर्षनी एवं नुक्कड़ नाटक के माध्यम से प्रचार प्रसार करने मे मददगार रहा है।

Annual Work Plan - Madhya Pradesh- Manav Jeevan Vikas Samiti - Jan - Dec 2014

Sl.No.	Activity	Total Units Approved	Complite Activity	Participants EWR	Other Women	Men
1. SWL - SWEEP Campaign						
	Sweep - Potential leadership workshops	35	35	236	1171	0
	Simulation Camps	30	30	165	1605	0
	Village/Cluster Meetings/Exhibition/ Rally	100	100	477	3471	281
	Slogan Writing	50	50	193	2365	983
	Women Conference/ Sweep Meeting	3	3	80	406	11
	Information Centre	6	6	324	9087	6116
2. Federation Strengthening (FS)						
	Federation meetings at Block level	4	4	160	2	0
2. Advocacy/ Alliance Building/ Communication						
	16 Days VAW Campaign	1	1	328	3565	2426

1. फेडरेषन मीटिंग ब्लॉक स्तरीय

एजेण्डा –

- स्वीप अभियान पर संघ की भूमिका पर चर्चा।
- लोकसभा चुनाव पर चर्चा , आगामी पंचायत चुनाव पर संघ की भूमिका पर चर्चा।
- पिछले चार साल मे आपने क्या सीखा , आगामी 3 महीने मे क्या–क्या करेंगे। फेडरेषन की पहुंच विकसित करने के सम्बन्ध मे।

चर्चा –

कृष्णा सिंह सरपंच बिलायतकलां द्वारा संघ की बैठक की शुरूआत पिछले चार साल के अनुभव एवं सीख को बताकर किया गया। सभी संगठन की बहनें मानव जीवन विकास समिति एवं द हंगर प्रोजेक्ट से जुड़कर अपना डर और झिझक दूर कर पाये है जिससे अब कही भी बात करने मे डर नही लगता। **तुलसा बाई** सरपंच लखाखेरा हमने तो संस्था से जुड़कर बहुत दूर दूर तक जाते है और सीखते है। आंगनवाड़ी को संस्था द्वारा जब कही गई थी देखी की यहां अच्छी चल रही है तो उसी प्रकार से अपने गांव की आंगनवाड़ी को भी बना दिया यह सीख भी हमे मिली। **तुलसा बाई पंच नन्हवारासेझा** हमने सभी पंच सरपंच बहने मिलकर सरकारी राषन की दुकान की गड़बड़ी को ठीक किया है। अब सही मात्रा मे सभी को राषन मिलने लगा है। **समुदिया बाई सरपंच कछारी** आंगनवाडी और स्कूल की निगरानी करने जाते है मध्यान्ह भोजन को चेक करते है। जिससे अब सुधार हुआ है। संगठन का दवाब भी बना रहता है। **कौषिल्या बाई सरपंच नन्हवाराकलां** अन्दर की झिझक दूर हुई हमे आगे बढ़ने के लिए संगठन का अच्छा साथ मिला। **ज्ञान बाई पंच झापी (कछारी)** हम भी बहुत कुछ सीख गये है घर से बाहर निकलने लगे है।

राधा बाई पंच बिलायतकलां मानव जीवन विकास समिति से जुड़कर ही अपनी झिझक एवं डर दूर कर पाये है हमने लोकसभा चुनाव मे अधिक से अधिक महिलाओं को बोट डालने को प्रेरित किया है। आगामी पंचायत चुनाव मे भी आगे आयेंगे तथा अपने साथ अन्य दूसरी महिलाओं को भी चुनाव मे खड़े होने को प्रेरित करेंगे। **कमला बाई पंच नन्हवारा सेझा** फेडरेषन की भूमिका को मजबूत करने के लिए हमे तथा संगठन को प्रयास करना होगा कि गांव का विकास हो लोगों का काम न होने पर संगठन के प्रयास अधिकारियों से जाकर संवाद करना होगा जिससे संगठन का नाम होगा। **कौषिल्या बाई सरपंच नन्हवारा कलां** कोई भी काम हो संघ के माध्यम से पूरा कराने के लिए ताकत मिल जायेगी। मछलियों का उदाहरण देकर भी बताया गया कि आप तो जानते है कि यदि तालाब मे एक बड़ी मछली होगी तो छोटी–छोटी मछलियों को खा जाती है, लेकिन वही पर अगर छोटी–छोटी मछलियों का यदि संघ बन जाता है तो बड़ी मछली का रूप धारण कर लेती है और खुद ही बड़ी मछली को खाना शुरू कर देती है। **प्रभा सिंह सरपंच पथवारी** – आज कल तो पानी की समस्या, बी.पी.एल. कार्ड की समस्या, आंगनवाड़ी भवन की समस्या, आंगनवाड़ी तथा स्कूल मे मध्यान्ह भोजन बच्चों को सही न मिलना, समूह की ग्रेडिंग की समस्या, रोजगार गारंटी योजना के काम का मजदूरी भुगतान की समस्या, शौचालय की राषि बढ़ाने एवं पंच सरपंच को मानदेय दिलाने की समस्या आती है संगठन के प्रयास से इस कात को प्रषासन के सामने रखा जायेगा।

श्रीमती बबीता सिंह बड़वारा जनपद पंचायत से अपने उद्‌बोधन में कहा कि आप सब निर्वाचित बहनें आप सभी का स्वागत है। हम सब मिलकर वास्तविक पंचायतीराज की भावना को समझकर आगे के कार्यक्रमों में भाग लेकर बड़वारा ब्लाक को विकास की धारा से जोड़ने का प्रयास करेंगे।

श्री के.एन. तिवारी ब्लॉक समन्वयक रोजगार गारंटी योजना जनपद पंचायत बड़वारा शासन के द्वारा कल्याणकारी योजनाऐं दी जाती है वह सब पंचायत को सौप दी जाती है वह पावर सरपंच के हाथ मे होती है जो कि पात्र व्यक्ति को ग्रामसभा एवं बैठक मे अनुमोदन करके उसको लाभ दिलाया जा सकता है। सबसे मुख्य बात तो यह है कि सभी समय पर कार्यालय नियमित रूप से 11.00 से 5.00 बजे तक खुलना चाहिए कार्यालीन समय पर सरपंच एवं सचिव को नियमित बैठना है और गांव की समस्या पर ध्यान देते हुए काम कराना है सरपंच को इतना तक पावर है कि वह सचिव को जब छुट्‌टी देगा तभी कार्यालय छोड़ सकता है वरन वह अपनी अनुमति से कोई भी काम नही कर सकता है।

श्री नारायण सोनी सचिव संघ के बड़वारा ब्लॉक अध्यक्ष सबसे पहली बात तो यह है कि यदि महिला सरपंच है तो महिला अपने पद को स्वयं संभाले क्योंकि देखा जाता है कि महिला की जगह उसका पति जाता है और अपना अधिकार बताता है यदि महिला सक्षम हो गई और अपना अधिकार और कर्त्तव्य जानने लगेंगी तो पुरूष वहां नही जायेगा। पंचायत मे वर्ष मे चार बार ग्रामसभा होती है और मासिक बैठक होती है उसमे जाकर आय व्यय का हिसाब लें तथा अपनी एवं गांव की समस्या को प्रस्तावित करायें जरूर ही हल होगा। जैसे गरीबी रेखा मे नाम जुड़ने के लिए तहसीलदार के यहा आवेदन किया जाता है फिर तहसीलदार पटवारी के द्वारा जांच कराता है उसमे अंक निर्धारित होता है कि जो व्यक्ति को 0 से 8 अंक तक मिलते है उसे अति गरीबी की श्रेणी मे जाने देते है एवं 8 से 14 अंक प्राप्त करने वाले को गरीबी रेखा मे जोड़ दिया जाता है तथा इसके ऊपर अंक प्राप्तकर्ता को सामान्य की श्रेणी मे जाने देते है।

कृष्णा सिंह सरपंच बिलायतकलां आगामी प्लानिंग करेंगे। **कृष्णा बहन** सभी बहनें होने वाले चुनाव मे अन्य महिलाओं को वोट डालने का महत्व बतायेंगे। पैसा के लालच मे नही पड़ना अपने मन से जिसको भी वोट देना हो दीजिए

2. स्वीप गांव/कलस्टर मीटिंग/एक्जवीषन/रैली कार्यक्रम

एजेंडा -

- पंचायत चुनावी प्रक्रियाओं मे महिलाओं की सशक्त भागीदारी के सम्बन्ध मे। पंचायत में महिलाओं को क्यों चुनकर आना चाहिये।
- अच्छे नेता के गुण। महिलाओं की एकजुटता के लिए प्रेरित करना।
- फेडरेशन सदस्यों को पंचायत अनुसार जोड़ना और उनके नेतृत्व में मीटिंग आयोजित होना।
- महिलाओं को विभिन्न माध्यमों से मीटिंग की पूर्व सूचना मिलना।
- आयोजन में सक्रीय महिलाओं को भागीदार बनाना। स्थानीय मुद्‌दो को पंचायत चुनाव से जोड़कर देखना।

बातचीत – मुन्नी बाई पंच बिलायत खुर्द – द हंगर प्रोजेक्ट की बैठक के बाद ग्राम पंचायत और जनपद पंचायत मे पात्र हितग्राहियों का पेंषन दिलाया वह महिला है प्रेम बाई, छितिया बाई।
तुलसा बाई सरपंच लखाखेरा – पानी की समस्या पर प्रस्ताव रखकर हैण्ड पम्प लगवाया, तथा 57 लोगों को पेंषन दिलाया।
प्रभा सिंह सरपंच पथवारी – सड़क का काम, पेंषन का काम, पानी, बिजली आदि समस्या पर काम को करवाया है। साथ ही इन्दिरा आवास जैसे धनिया बाई,रामबाई,जानकी बाई,कैलसिया बाई। 11 लोगों को विकलांग पेंषन।
समुदिया बाई सरपंच कछारी – पात्र हितग्राहियों को लाभ दिलाने का काम किया है।
तुलसा बाई पंच नन्हवारा सेझा अगर हमको बैठक करनी होती है तो सभी पंच मिलकर बिना सचिव सरपंच के कर लेते है। हम पंच है फिर भी काम करते है और काम की मांग करने पर काम दिया जाता है। फिर काम पर हमने मजदूरों की गिनती कर लेते है और पूरा हिसाब किताब रखते है। जिससे सरपंच सचिव अब चोरी नही कर सकते है।
गीता बाई पंच बड़ागांव हम तो पंच सरपंच के साथ रहकर आगे बढ़े है पंचायत के सचिव हमारा काम नही करता है हम गांव का विकास चाहते है।
तिरसिया बाई सरपंच बड़ागांव हम सरपंच बनने के बाद महिलाओं के साथ आना जाना प्रारम्भ किये जिससे हमारे मन मे डर था वह दूर हुआ पहले मेरे पति सरपंच थे उनके स्वर्गवास होने के बाद लोगों ने मुझे सरपंच बना दिया जिससे मै अपने परिवार का पालन पोषण कर रही हूं।
कल्लू बाई पंच बड़ागांव हम बहुत कुछ सीख गये है अब फिर से पंचायत का चुनाव होगा उसमे हम फिर से चुनाव मे खड़े होंगे और जीतेंगे। स्वीप अभियान मे हम सहयोग करेंगे ।
शकुन्तला बाई पंच बिलायतखुर्द अपने उद्बोधन में सबको धन्यवाद देते हुए कही की मै शासन द्वारा दिये गये गरीबों को जो भी लाभ होगा उचित रूप से दिलवाने के लिए तत्पर रहूँगी एवं गांव की गली में नाली की व्यवस्था भी करवाऊंगी। तथा मिलजुल कर काम करने व पंचायतों का विकास करने में गॉव की मूलभूत सुविधाओं को लागू कराने, शासन की योजनाओं का सही क्रियान्वयन करने पर बल दिया।
सहजकर्ता यह सब आपकी जबाबदारी है कि आप पंचायत मे जाये और बैठक की जानकारी ले बैठक मे काम कराने का रूप रेखा तैयार कर काम को आगे बढ़ाये।
रैली एवं प्रदर्शनी कार्यक्रम का एजेण्डा निम्नानुसार है –

- स्वीप कार्यक्रम की जानकारी देना । महिला अधिकार एवं आरक्षण की जानकारी देना।
- पोस्टर पम्पलेट के माध्यम से लोगों को जागृत करने का काम किया गया।
- आरक्षण की भ्रान्तियां को तोड़ने का किया गया। प्रदर्षनी के माध्यम से चुनाव की प्रक्रियाओं को भी जोड़ा गया।
- दलित एवं वंचित समुदाय की महिलाओं को जोड़ने का काम किया।

3.संभावित महिला उम्मीदवारों की कार्यषाला

एजेंडा –

- कार्यषाला का उद्देष्य महिला नेतृत्व क्षमता का विकास करना। अभियान की जानकारी देना।
- पंचायत चुनाव में खडें होने के लिए तकनीकि जानकारी देना।
- नामांकन फार्म भरने के लिए क्या क्या दस्तावेज जरूरी है।
- आरक्षण की जानकारी देना। महिलाओं के चुनाव मे अधिकार क्या है।
- पंचायत चुनाव में किस पद पर खड़ा होना चाहती है ? और क्यों ?
- सम्भावित उम्मीदवारों के सम्बन्ध मे। महिला नेतृत्व की जानकारी देना।
- राजनीति की जानकारी। त्रिस्तरीय पंचायतीराज चुनाव की जानकारी देना।

अधिकार – महिला और पुरूष को बराबरी का अधिकार दिया गया है। कोई भी काम की मजदूरी महिला हो या पुरूष बराबर मिलनी चाहिए क्योंकि काम तो बराबर करते है यह भी निर्धारित कर दिया गया है कि अब महिला हो या पुरूष सभी को बराबर मजदूरी मिलेगी। काम मे दुराभाव नही करना चाहिए। सहभागियों से पूंछा गया कि सरकार द्वारा प्राप्त **6 मौलिक अधिकार** कौन–कौन से दिये गये है। सभी सहभागियों ने कहा हमें पता नही हैं फिर हाथ की ऊंगुलियों के माध्यम से 6 मौलिक अधिकारों के बारे में समझाया गया।

1. स्वतंत्रता का अधिकार
2. समानता का अधिकार
3. धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार
4. शिक्षा का अधिकार
5. शोषण के विरूद्ध अधिकार
6. संवैधानिक उपचारों का अधिकार।

संविधान द्वारा प्राप्त अधिकारों की बारीकियों को महिलाओं को बताया गया।

माया बाई कछारी से इन्होने कहा की महिलाओं मे बहुत ताकत है लेकिन महिलाओं को स्वयं पता नही है अपना अधिकार और महिलाओं को बताया भी नही जाता था क्योंकि पंचायत का सचिव चाहता है कि महिलाऐं यदि जागरूक हो गयी तो महे नही टिकने देंगी ।

राम बाई कछारी ने कहा कि हम 12 महिलाओं का समूह बनाकर शासन की योजनाओं का लाभ ले रहे है। समूह द्वारा कुछ राषि भी बचत किया जाता है जो विकास कार्य मे लगाया जाता है।

गीता बाई चांदन द्वारा बताया गया कि स्वास्थ्य केन्द्र, प्राथमिक शाला तथा आंगनवाड़ी केन्द्र के मध्यान्ह भोजन जैसे कार्यक्रम का निगरानी करना आवष्यक है इसके लिए 5–10 महिलाओं का संगठन हो और वह संगठन जाकर समय–समय पर निगरानी करती रहे इसे हम निगरानी समिति भी कह सकते हैं।

उमा बाई चांदन से ग्राम पंचायत के सरपंच एवं सचिव की मनमानी से गांव का विकास सही ढ़ंग से नही हो पाता है जिससे हम गांव की सभी महिलाओं ने सोंचा है कि संगठन बनाकर अपने अधिकारों का लाभ उठाये। इसी से ही समाज गांव तथा देष का विकास हो सकता है।

रूकमणी बाई नन्हवारासेझा से हम चाहते है हमारा, गांव तथा पंचायत का विकास हो लेकिन क्या करे दबंगो के मारे विकास नही हो पाता है समाज मे फैली कुरूतियां भ्रष्टाचारी के कारण भी नही आगे बढ़ पाते है।

छोटी बाई नन्हवारासेझा साझा मंच की महिला मनरेगा मे 100 दिन का काम तो निर्धारित है परन्तु 100 दिन काम मिल नही पाता है और निर्धारित समय पर काम भी नही मिलता है ना ही काम न देने पर बेरोजगारी भत्ता दिया जाता है। मजदूरी कम दी जाती है बहुत दिनों के बाद दिया जाता है। जिसके कारण भी हम परेषान है। तभी तो लोग वहुतायत संख्या मे पलायन करते है।

अनुसुईया बाई लखाखेरा वृद्वापेंषन, विकलांग पेंषन, विधवा पेंषन भी पात्र हितग्राहियों को पेंषन दिलाने मे संगठन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

नीता पाण्डेय लखाखेरा जब मै पंच बनी थी उस समय मुझे कोई जानकारी नही थी जब से मानव जीवन विकास समिति के द्वारा चलाये जा रहे प्रषिक्षण एवं बैठक मे जाने लगे है तब से जानकारियां प्राप्त होने लगी है। और साहस भी आने लगी है महिला आरक्षण के बारे मे भी पता चल गया यह सब पता चल जाने से हमने अपने गांव के आंगनवाड़ी एवं प्राथमिक शाला मे जाकर मध्यान्ह भोजन की निगरानी करते है जिससे अब सुधार आया है।

4. सिमुलेषन कैम्प – चुनाव की समस्त प्रक्रियाओं को प्रयोगिक रूप मे करके समुदाय को बताना।

एजेण्डा –

- समस्त चुनावी प्रक्रियों मे महिलाओं की सषक्त भागीदारी। स्वीप कार्यक्रम अन्तर्गत गांव मे महिलाओं को जागृत करना।
- आगामी पंचायत चुनाव की जानकारी। महिलाओं के अधिकार और आरक्षण की जानकारी देना।
- पंचायत चुनाव मे महिलाओं के आरक्षण की गहराई से जानकारी देना। अनारक्षित सीट पर भी महिलाओं की सषक्त भागीदारी हो।
- इस बार के चुनाव मे ई.व्ही.एम. मषीन का उपयोग किया जायेगा। चुनावी प्रक्रिया को करके बताना।
- फार्म भरने से लेकर चुनाव की घोषणा तक की प्रक्रिया की जानकारी देना।

उद्धेष्य

1. ग्राम पंचायत चुनावी प्रक्रियाओं मे महिलाओ की सक्रिय भागीदारी हों। महिलाओं के लिये सकारात्मक वातावरण बने।
2. लोगों में चुनाव प्रक्रिया की समझ। पंचायत चुनावो मे महिलाओं को आरक्षण की समझ विकसित हों।
3. भय मुक्त वतावरण बने ताकि स्वयं के निर्णय से महिलायें संवैधानिक पद पर आयें। मतदान का प्रतिषत बढ़े एवं महिला मतदान प्रतिषत बढ़े।
4. ज्यादा से ज्यादा महिलाये प्रभावी रुप से चुनाव लडें। आनारक्षित सीट को पुरुष सीट मानने का भ्रम दूर करना।

अभियान के संदेष

- पंचायत चुनाव में महिलाओं की सम्पूर्ण भागीदारी, सामूहिकता के साथ भयमुक्त वातावरण सुनिष्चित करे।
- अनारक्षित सीटों से भीम हिला चुनाव हेतु खड़ी हो सकती है। मतदाता सूची में नाम जुड़वाये और अच्छा नेता चुनकर लाये।
- चुनाव के समय महिला एजेण्ट बनाये जिससे महिलाओं के साथ भेदभाव न हो निष्पक्ष मतदान हो सके।
- कोई पुरूष सीट नहीं होती, अनारक्षित सीट होती है। स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव, लोकतंत्र को सषक्त बनाता है।

स्वीप मे संघ की भूमिका –

- ❖ संगठन के माध्यम से स्वीप अभियान को चलाने मे सफल बनाया जायेगा।
- ❖ संगठन के द्वारा गांव के अन्य जागरूक महिलाओं को जोड़ा जायेगा।
- ❖ आगामी पंचायत चुनाव हेतु महिलाओं को तैयार किया जायेगा।
- ❖ साझा मंच एवं समूह की महिलाओं को जोड़ने का काम किया जायेगा।

प्रकिया – गांव मे जाकर चुनावी प्रकिया का प्रदर्षन करना जिसमे सीट का आरक्षण, नामांकन फार्म से लेकर, प्रचार–प्रसार तक की प्रकिया शामिल है। नामांकन फार्म कहां भरे जायेंगे एवं दस्तावेज क्या–क्या लगना है तथा फार्म भरने का समय क्या होगा और फार्म वापसी का समय कितने दिन का होगा आदि बातों को समाहित किया गया है।

5. सूचना केन्द्र – चुनावी प्रक्रियाओं की समस्त जानकारी सूचना केन्द्र पर रखना। नमांकन फार्म, प्रचार–प्रसार, उम्मीदवार की पात्रता, चुनाव की अधिसूचना, मतदाता सूची, आरक्षण, मतदान, मतगणना, प्रमाण पत्र आदि प्रक्रिया षामिल है।

कलस्टर स्तर पर सूचना केन्द्र की स्थापना की गई है। जहां पर चुनाव सम्बंधी समस्त जानकारी उपलब्ध है। आई.ई.सी. मटेरियल, बुकलेट और फार्मेट भी उपलब्ध है। नामांकन फार्म से लेकर प्रमाण पत्र प्रदाय तक की जानकारी उपलब्ध है।

चुनावी प्रक्रिया – नमांकन फार्म, प्रचार–प्रसार, उम्मीदवार की पात्रता, चुनाव की अधिसूचना, मतदाता सूची, आरक्षण, मतदान, मतगणना, प्रमाण पत्र आदि प्रक्रिया षामिल है। अनारक्षित सीट पर भी महिलाऐं चुनावी मैदान मे उतरे। मतदान एवं मतगणना होते समय एजेण्ट महिला भी हो। शत् प्रतिषत महिलाओं की वोटिंग हो। अन्त मे जीती हुई महिला प्रत्यासी स्वयं अपना प्रमाण पत्र लेने जाये।

- चुनाव की समस्त प्रक्रियाओं की जानकारी जैसे – नमांकन फार्म, प्रचार–प्रसार, उम्मीदवार की पात्रता, चुनाव की अधिसूचना, मतदाता सूची, आरक्षण, मतदान, मतगणना, प्रमाण पत्र आदि प्रक्रिया षामिल है। निष्पक्ष चुनाव का महत्व (बिना रिष्वत, प्रलोभन आदि के)।
- अनारक्षित सीट होने पर भी महिलाओं को चुनाव लडने हेतु प्रोत्साहित करना ।
- वंचित उम्मीदवार के संबंध में प्रकियाऐं।
- जानकारी (जरूरी फोन नं.,पोस्टर–पंपलेट, नारा आदि की जानकारी)।

नोट – चुनाव से सम्बन्धित किसी भी प्रकार की गड़बड़ी होने पर षिकायत –
राज्य चुनाव आयुक्त, जिला कलेक्टर, पर्यवेक्षक को करें।
म.प्र. राज्य निर्वाचन आयोग, निर्वाचन भवन 58 – अरेरा हिल्स भोपाल,
फोन नं. 0755–2551535 / 2553623 फेक्स – 0755–2551076

6. महिला सम्मेलन/स्वीप मीटिंग – महिलाओं को अधिकारों के प्रति जागरूक करना, कानूनी बारीकियों की जानकारी, सामाजिक मुद्दों पर ज्यादा से ज्यादा पैरवी करना, आगामी पंचायत चुनाव की जानकारी से अवगत कराना।

एजेण्डा -

1. जागृति महिला संगठन को मजबूत करने के सम्बन्ध मे। महिला अधिकार/आरक्षण के सम्बन्ध मे महिलाओं को अवगत कराना।
2. अनारक्षित सीट पर एवं खुली सीट पर भी महिला उम्मीदवारी करें। स्वीप कैम्पेन के सम्बन्ध मे।
3. महिला हिंसा अभियान के बारे में । विकास में पंचायतों की भूमिका, पंचायत में महिला नेतृत्व के अनुभव को साझा करना। कैसा नेतृत्व चाहते है ?
4. पंचायत चुनाव में क्या क्या बाधाएं (चुनौतिया) आ सकती है ? महिला नेतृत्व के लिए माहौल बनाना। सामूहिक सहयोग और जोश लाना।
5. आगामी पंचायत चुनाव के सम्बन्ध मे । जागृति महिला संगठन को मजबूत करने के सम्बन्ध मे।
6. महिला अधिकार/आरक्षण के सम्बन्ध मे महिलाओं को अवगत कराना। स्वीप अभियान के सम्बन्ध मे।
7. महिला हिंसा अभियान के बारे में । विकास में पंचायतों की भूमिका।

8. पंचायत में महिला नेतृत्व के अनुभव को साझा करना। कैसा नेतृत्व चाहते है ?
9. पंचायत चुनाव में क्या क्या बाधाएं (चुनौतिया) आ सकती है ? महिला नेतृत्व के लिए माहौल बनाना।
10. सामूहिक सहयोग और जोष लाना। मतदान केन्द्रों को भय मुक्त बनाने के सम्बन्ध मे।

कार्यक्रम का उद्धेष्य बताते हुए बताया गया कि त्रिस्तरीय पंचायती चुनाव होने जा रहा है जिसमे आप सभी को अधिक से अधिक संख्या मे चुनावी समस्त प्रक्रियाओं मे प्रत्यासी, प्रस्तावक, समर्थक एवं एजेण्ट के रूप मे भागीदारी करना है। सूचना केन्द्रो का संचालन कलस्टर स्तर पर किया गया है वहां पर चुनाव सम्बन्धी समस्त जानकारियां उपलब्ध करायी गई वहां पर अधिक से अधिक लोगों को जाने को प्रेरित किया जाय जिसमे से पंचायत चुनाव मे आने वाली तकनीकि कठिनाईयों को दूर किया जा सकता है।

कृष्णा सिंह द्वारा बताया गया कि हम भी प्रयास कर रहे है कि अधिक से अधिक संख्या मे महिलाऐं आगे आये और भागीदारी करें। स्वीप अभियान कार्यक्रम के माध्यम से अधिक से अधिक लोगों तक स्वीप का ऐलान पहुंचाने का काम किया जा रहा है।

मुन्नी बा**ई पंच बिलायत खुर्द – अपने** पंचायत मे चल रहे काम की निगरानी कर मेट द्वारा फर्जी हाजिरी पकड़े जाना सामने आया जिस पर रोक लगाया गया। मेट को हटाने को कहा गया जिसमे गांव के लोगों ने सहयोग किया और मेट कार्य से कार्यमुक्त किया गया। पंचायत मे सरपंच, सचिव के चलते विकास कार्य ठीक से नही हो पा रहा है जिससे हितग्राहियों को लाभ नही मिल पा रहा है।

तुलसा बाई – पंच नन्हवारा सेझा जो रा**षि** पंचायत मे निर्माण कार्य के लिए आती है। उस रा**षि** का सही उपयोग नही किया जाता है सरपंच को बताया गया कि इस रा**षि** का सही उपयोग न होने पर आपके ऊपर कार्यवाही की जायेगी। हम महिलाऐं जागरूक हो गये है आने वाले समय मे भी जागरूक महिलाऐं आकर पंचायत के काम को सही रूप से करने का प्रयास करेंगी। **सुषीला बाई पंच कछारी** विकास कार्य मे जो बाधा आती है उसको रोकने के लिए सभी महिलाओं को एक होना आवष्यक है।

कलावती विलायत खुर्द सरपंच पंचायत का विकास कार्य सही ढ़ंग करा रही हूँ।

महिला सम्मेलन कार्यक्रम को अधिकतर पंचायत चुनाव से जोड़कर रखा गया है वह यह भी है कि महिलाऐं स्वयं अभियान से जुड़कर आगे तो आये साथ ही दूसरों को भी जोड़े जिससे कि महिलाऐं अपने अधिकार के प्रति जागरूक हो सके। पंचायत चुनाव के लिए एक अच्छा महौल बनाये जिससे कि भय मुक्त वातावरण बनें। महिलाऐं चुनावी समस्त प्रक्रियाओं मे भाग लें जिससे अन्य महिलाओं की भी क्षमता मे विकास होगा और निडरता से जुड़ सकेंगी।

द हंगर प्रोजेक्ट भोपाल से षिवानी शर्मा जी ने बतायी कि पंचायत चुनावों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी बढ़ाने के लिये मध्यप्रदेष के 40 जिलों में 30 स्वयं सेवी संस्थायें और 2000 जागृति संगठन सदस्यों के साथ मिलकर स्वीप कैम्पेन चलाया जा रहा है। जिसका उद्देष्य पंचायत चुनावों की समस्त प्रक्रियाओं में महिलाओं की हर स्तर पर सषक्त भागीदारी को बढ़ावा देना है।

मानव जीवन विकास समिति से कार्यक्रम समन्वयक रामकिषोर रैदास ने भी ''स्वीप'' कार्यक्रम के बारे मे बताया कि बड़वारा ब्लॉक की 50 पंचायतों मे स्वीप कैम्पेन अभियान पंचायत चुनाव मे महिलाओं की सषक्त भागीदारी को लेकर सिमुलेषन के माध्यम से चलाया जायेगा जिसमे चुनाव के नामांकन फार्म से उपयोगी दस्तावेज एवं अन्य बारीकियों को भी बताया जायेगा जिसमे हमे ''ई.व्ही.एम.'' मषीन की आवष्यकता पड़ेगी इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए प्रषासन एवं मीडिया साथी से भी सहयोग की अपेक्षा की है।

परिणाम :–

1. महिलाओं मे समझ विकसित हुआ।
2. महिलाऐं चुनावी प्रक्रियाओं मे शामिल होने एवं सहयोग करने को तैयार हुई।
3. महिलाओं मे भी बोलने की क्षमता विकसित हुई।
4. पंचायतीराज के बारे मे जानने की उत्सुकता हुई।
5. एक दूसरे के पंचायत चुनाव के सम्बन्ध मे जानकारी मिली।
6. पति का दबाव थोड़ा कम हुआ और अपने काम के बारे मे सोंचने लगी।
7. जातिगत भेदभाव कम हुआ। अनारक्षित सीट की भ्रान्तियां दूर हुई।

7. महिला हिंसा विरूद्ध कैम्पेन – महिला हिंसा के विरूद्ध पखवाडा का मुख्य उद्देष्य है कि समाज में महिलाओं के प्रति हो रही हिंसा खत्म हो, महिला हिंसा से जुडी महत्वपूर्ण जानकारियों को समुदाय तक पहुंचाये एवं बाल विवाह, भ्रुण हत्या जैसे कुरूतियों के खिलाफ लोग जागरूक हो ।

प्रस्तावना – महिला हिंसा के विरूद्ध पखवाड़ा चलाने का आयोजन जागृति महिला पंच, सरपंच संगठन बड़वारा जिला कटनी की महिलाओं ने मानव जीवन विकास समिति के तत्वावधान मे द हंगर प्रोजेक्ट भोपाल के सहयोग से बड़वारा ब्लॉक के 50 पंचायतों के चलाने को तय किया गया।

महिला जागृति पंच सरपंच संगठन बडवारा की महिलाओं ने गांवों–गॉवों तक पहुॅचाने सरकारी कार्यालयों को संवेदनषील करना तथा समाज में महिला हिंसा के माहौल को लोगों तक पहुचाने के लिए एवं तैयार करने के लिए मानव जीवन विकास समिति ने अपने साधन व द हंगर प्रोजेक्ट भोपाल के सहयोग से बडवारा जिला कटनी में महिला जनप्रतिनिधियों के साथ माहौल बनाने लायक कार्यक्रम अभियान के तौर मे चलाया ।

इस पखवाडे को सफल बनाने के उद्देष्य से मानव जीवन विकास समिति बिजौरी ने अपने वाहन में एक रथ जैसे वैनर, पोस्टर के साथ अपने कार्यकर्ता साथियों और जागृति महिला पंच सरपंच संगठन बडवारा के पदाधिकारियों के साथ 25/11/2014 को बडवारा में तैयारी बैठक का आयोजन किया । कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार किया गया कि हमें अभियान को कैसे तथा कहां–कहां चलाया जायेगा।

उद्देश्य -

- महिला हिंसा विरूद्ध अभियान के माध्यम से संदेष को पहुंचाना।
- समाज में महिला हिंसा क बढती घटनाओं पर अंकुष लगाना ।
- महिला हिंसा के संरक्षण अधिनियम 2005 की प्रचार प्रसार करना ।
- बालिका कन्या भ्रुण हत्या पर रोक लगाना।
- बाल विवाह रोकना । महिलाओं व लडकियों को बराबरी के हक की जागरूकता लाना ।
- सामाजिक कुरीतियों को खत्म करने के लिए समुदाय को जानकारी के माध्यम से जागरूक करना।
    - पंचायत चुनावी प्रक्रियाओंमे महिलाओं की सषक्त भागीदारी। स्वीप अभियान कार्यक्रम
    - क्षेत्र में महिला हिंसा के विरूद्ध महौल तैयार हो सके ताकि महिलाओं पर हो रही हिंसात्मक गतिविधियों पर रोक लग सके।
    - परिवार, समाज, गांव में हो रहे भ्रूण हत्या पर रोक लग सके।
    - बालिका षिक्षा, कन्यादान योजना, भ्रूण लिंग परिक्षण पर प्रतिबंध, गोद भराई, जननी सुरक्षा योजना, प्रसूति सहायता योजना का सही क्रियान्वयन हो सके।
    - घरेलु महिला हिंसा कानून क्या है एवं कौन–कौन से है जानकारी देना। महिला हिंसा विरोध कानून की जानकारी देना।

मुख्य संदेश –

1. कन्या भ्रूण हत्या करना अपराध है एंव सामाजिक कलंक है। बाल विवाह करना कानूनी अपराध है।
2. महिलाओं को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से सशक्त बनाने की पहल।
3. बेटियां बोझ नहीं बल्कि वरदान। पीड़ित महिला को कहा जाना है इसकी जानकारी भी उपलब्ध कराना।
4. प्रभावी पंचायत बनाने के लिए ग्राम सभा सशक्तिकरण की पहल।
5. चुनावी समस्त प्रक्रियाओं मे महिलाओं की सषक्त भागीदारी सुनिष्चित हो।
6. महिलाऐं निडर होकर, भयमुक्त होकर मतदान कर सके। मतदान केन्द्रों मे भयमुक्त वातावरण बनाना।

7.3 नवांकुर परियोजना द्वारा संचालित कार्यक्रम का परिचय – नवांकुर संस्था मानव जीवन विकास समिति द्वारा म.प्र. जन अभियान ब्लॉक बड़वारा जिला कटनी के सहयोग से वर्ष 2009–10 मे चयनित प्रस्फुटन समितियों एवं स्पंदन समितियों के साथ प्रेरक के रूप मे उनके क्षमतावर्द्धन का कार्य किया जा रहा है। 10 प्रस्फुटन गांव – 1. धनवारा, 2. भादावर, 3. झरेला, 4. भजिया, 5. धनवाही टोला, 6. इमलिया, 7. बसाड़ी, 8. बुजबुजा, 9. पोड़ी, 10. मझगवां मे तथा इनके अन्तर्गत आने वाले 20 स्पंदन गांव के क्षमतावर्द्धन का कार्य किया गया।

भूमिका – मध्यप्रदेष जन अभियान परिषद् द्वारा विकास खण्ड स्तरीय चयनित नवांकुर संस्था मानव जीवन विकास समिति ने जन अभियान परिषद् द्वारा गठित प्रस्फूटन समिति एवं स्पंदन गॉव में कार्यक्षमता वृद्धि एवं विकास हेतु निर्धारित नौ बिन्दुओं जैसे – 1. स्वास्थ्य, 2. षिक्षा, 3. पर्यावरण सरंक्षण, 4. जल संरक्षण, 5. ऊर्जा संरक्षण, 6. नषामुक्ति, 7. समग्र स्वस्छता एवं साफ सफाई, 8. कुपोषण एंव परिवार नियोजन, 9. हरियाली एवं कृषि विषय पर प्रस्फूटन समिति एवं नवांकुर संस्था द्वारा प्रेरक के रूप मे कार्य किया जा रहा है । समितियों के साथ बैठक कर समितियों के दस्तावेजीकरण, लेजर, कैष बुक, बैठक कार्यवाही रजिस्टर आदि संधारण का भी कार्य किया जाता है। शासन की योजनाओं का लाभ गांव की जनता तक सीधे पहुंचाना साथ ही पात्र हितग्राहियों को लाभ मिले इस प्रकार से प्रस्फुटन समितियों एवं नवांकुर संस्थाओं के द्वारा कार्य किया जा रहा है। प्रस्फुटन समितियों के द्वारा गांव मे विभिन्न कार्यो की निगरानी की जाती हैं। और आंगनवाड़ी, स्कूलों आदि की निगरानी की जाती है। जनसूचना केन्द्रों के द्वारा सही समय पर ग्रामीणों को सही जानकारी दी जाती है।

आओ बनाये अपना मध्यप्रदेष, स्वर्णिम मध्यप्रदेष, के नौ बिन्दुओं पर चर्चा एवं विश्लेषण करना एवं सूचना केन्द्रों के दस्तावेजीकरण। समिति की बैठक कर कार्यों की जानकारी एवं गॉव मे दिवाल लेखन तथा गतिविधियों आदि का आयोजन किया गया। स्वच्छता अभियान एवं पानी बचाओं अभियान चलाया गया। सरस्वती शिशु मंदिर स्कूल बसाड़ी मे लगभग 55 बच्चों के साथ प्रतियोगिता का आयोजन रखा गया। झरेला मे समिति के सदस्यों के सहयोग से बेटी बचाओं के नारे के साथ गांव मे प्रचार–प्रसार किया गया।

पिछले वर्ष की तरह इस साल भी भ्रूण हत्या रोकने जन–जागरूकता फैलाने के लिए रैली के माध्यम से नारों का उपयोग किया गया जैसे – 1. कोख मे बेटी करे पुकार। जन्म लेना मेरा अधिकार।। 2. जांच का साधन अल्ट्रा सोनोग्राफी। जो दुरूपयोग से करे हत्या, उसको नही माफी।। 3. नर नारी संख्या में अन्तर। क्या होगा फिर देष के अन्दर।। 4. देष में गर बेटियॉ अपमानित हैं, नाषाद हैं। दिल पे रखकर हाथ कहिये, देष क्या आजाद है ।।

लिंग चयन प्रतिषेध अधिनियम, 1994 बालिका भ्रूण हत्या कानूनन अपराध है। जबकि आज की बालिका कल की डाक्टर, वकील, षिक्षक, सरपंच बनती है। प्रसव पूर्व लिंग निर्धारण, प्रसव पूर्व लिंग जांच और लिंग जांच के बाद कन्या गर्भ मे हो तो गर्भपात कराना कानूनन जुर्म है। लिंग परीक्षण करने वाले चिकित्सक तथा महिलाओं को लिंग जांच के लिये बाध्य करने वाले परिवार के सदस्यों के लिए सजा व जुर्माने का प्रावधान है ऐसे चिकित्सकों का पंजीयन निलंबित तथा रद्द करने का प्रावधान है आदि जानकारियों से गांव के लोगों को अवगत कराया गया।

1. धनवारा, 2. भादावर, 3. झरेला, 4. भजिया, 5. धनवाही टोला, 6. इमलिया, 7. बसाड़ी, 8. बुजबुजा, 9. मझगवां, 10. पोड़ी, – भ्रूण हत्या रोकने का कार्यक्रम चलाया गया जिसमे धनवारा मे 21 मई 2013 को आंगनवाड़ी कार्यकर्ता अर्चना तिवारी के मुख्य अतिथि एवं सहायिका यषोदा बाई के तथा गांव की अन्य जागरूक महिलाओं को साथ मे बैठक कर भूण हत्या संबंधी जानकारियां प्रदान की गई एवं गांव मे संदेष देने के लिए रैली निकालने को तय किया गया तत्पष्चात गांव मे रैली निकालते हुए भ्रूण हत्या रोकने सम्बंधी नारे का भी गायन किया गया। गांव मे चौराहे–चौराहे पर बेटी बचाओं, एवं महिला सषक्तिकरण की भी जानकारियां दी गई। तथा लाडली लक्ष्मी योजना के पात्र हितग्राहियों को सभी सहभागियों के द्वारा सम्मानित किया गया और यह भी कहा गया कि छोटा परिवार सुखी परिवार होता है एवं लड़का और लड़की मे समानता आती है इसलिए आज से हम सभी दोनों को समानता की दृष्टि से देखना है भेदभाव नही करना है और दूसरों को भी प्रभावित करना है। यह शुभ संदेष गांव के हर व्यक्ति तक पहुंच जाना चाहिए ऐसा हम सभी का मानना है।

अन्तर्राष्ट्रीय तम्बाकू एवं धूम्रपान निषेध दिवस पर
जन जागरूकता अभियान

दिनॉक – 31 मई 2014 अन्तर्राष्ट्रीय धूम्रपान निषेध दिवस पर नवांकुर संस्था–मानव जीवन विकास समिति एवं प्रस्फुटन समितियों ने अपने सदस्यों सहित गांव गांव मे नषा मुक्ति का संदेष दिया साथ ही नषा से होने वाली हानियों को भी बताया गया, इस कार्यक्रम को नारे एवं दिवाल लेखन के माध्यम से प्रचार

पत्रिका 9
जबलपुर, रविवार, 01 जून 2014

नशामुक्ति का संदेश देने रथ को हरी झंडी

अंतरराष्ट्रीय तंबाकू व धूम्रपान निषेध दिवस पर रथ रवाना

बीमारियों से करें बचाव

प्रसार किया गया। वर्ष 2009–10 मे चयनित प्रस्फुटन समितियां धनवारा, इमलिया, झरेला, भजिया, भादावर, पोड़ी, मझगवां, बसाड़ी बुजबुजा, धनवाहीटोला मे कार्यक्रम आयोजित किया गया।

नषा नही करना है तो यारो, प्रभू भक्ति का नषा करो। करो दीन दुखियों की सेवा, उनके दि लमे बसा करो।।

मन मे दृढ़ संकल्प हो तो, ये दारू भी छूट जायेगी। जीवन मे खुषिया भर देगी, और बहार ले आयेगी।।

तन मन धन करते बरबाद। तम्बाकू , सिगरेट और शराब।।

दारू को पीना छोड़ो, परिवार से नाता जोड़ो। हमारा संकल्प नषा मुक्त मध्यप्रदेष।।

सोंचा नही था तकदीर यहाँ लायेगी। मंजिल से पहले ही जान चली जायेगी।।

शराब – जानलेवा

शराब जानलेवा है। इसके सेवन से निम्न रोग होते है – लीवर–यकृत का बढ़ जाना, पेप्टिक अल्सर, हिपेटाइटिस, विटामिन्स की कमी, पीलिया, कोमा–बेहोसी, सिरोसीस आफ लीवर, उच्च रक्त चाप, पेट मे पानी का भरना, कुपोषण, परिवार का टूटना, हाथ–पाव का लड़खड़ाना भी शराब के सेवन के कुपरिणाम है।

पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम–

दैनिक मध्यप्रदेश 3

कटनी शनिवार 7 जून 2014

पर्यावरण दिवस पर 10 हजार पौधे लगाने का संकल्प

जल अभियान परिषद ने बड़वारा में आयोजित की गोष्ठी

प्रस्फुटन समितियां करेंगी देखभाल

5 जून को पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य मे सभी प्रस्फुटन समितियों के साथ बड़वारा सभागार मे कार्यक्रम आयोजित किया गया । नवांकुर संस्था के सहयोग से महिला हिंसा के विरूद्ध अभियान के द्वारा हिंसा एवं बाल विवाह आदि की जानकारी दी गई एवं गॉव के लोगों को हिंसा न करने का संकल्प दिलाया गया। झरेला मे नवांकुर सस्था एवं प्रस्फुटन समिति के द्वारा हरियालीा पर्यावरण संरक्षण पर संगोष्ठी का कार्यक्रम रा गया जिसमें प्र्यावरण संरक्षण की जानकारी दी गई एवं पोलीथीन का उपयोग न करने को कहा गया है। इस संगोष्ठी में लगभग 45 प्रतिभगी शामिल हुए एवं लाभंवित हुए। भजिया मे मानव अधिकार दिवस समिति के 7 सदस्यों एवं 23 अन्य गॉव के प्रतिभागीयों के साथ मनाया गया साथ ही लोक सेवा गारण्टी अधिनियम की जानकारी से अवगत कराया गया तथा उर्जा संरक्षण पर सभी सी0एफ0एल0 बल्ब लगाने को कहा गया क्योकि सी0एफ0एल0 बल्ब 10 बाट का होता है इससे उर्जा बचत की जा सकती है।

धनवाहीटोला मे मानव अधिकार दिवस के उपलक्ष्य में बैठक रखा गया जिसमें अधिकार एवं कानून की जानकार दी गई इसी के साथ स्वस्थ्य विभाग से ए0एन0एम0 को बुलाया गया था जिसमें **5 कुपोषित** बच्चों की पहचान कर एन0आर0सी0 में भर्ती करवाया गया। बुजबुजा मे नवांकुर संस्था एम0जे0बी0एस0 प्रस्फूटन समिति एवं अन्य गॉव के प्रतिभागियों के साथ **नशा मुक्ति अभियान** पूरे गॉव में चलाया गया जिसमें 4 व्यक्ति शराब न पीने का संकल्प भी लिया है। धनवारा मे मानव अधिकार दिवस पर उर्जा संरक्षण हेतु एक संगोष्ठी कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें 33 महिला पुरूष भाग लेकर कार्यक्रम की रूपरेखा को आगे बढाया इसी के साथ समिति के सदस्यों द्वारा उर्जा बचत पर दिवाल लेखन भी किया गया।

इमलिया मे स्कूल के लगभग 30 बच्चों के साथ बात विवाद प्रतियोगिता किया गया जिसमें उर्जा संरक्षण पर्यावरण संरक्षण विषय पर चर्चा किया गया है प्राप्त हुई। भादावर मे साफ सफाई एवं स्वच्छता विषय को लेकर बैठक किया गया जिसमें हैण्डपम्प के आसपास 10 लोगों के साथ एवं गॉव के 8 लोगों के साथ साफ सफाई किया गया तथा गॉव में घूमघूमकर साफ सफाई के सबंध में जानकारी दी गई एवं दिवाल लेखन भी किया गया। मझगवां मे प्रस्फूटन समिति के सचिव एवं सदस्यों के साथ बैठक किया गया जिसमें अध्यक्ष काम करने को तैयार नहीं है उसपर सुझाव एवं विचार किया गया तथा अन्य सभी सदस्यों ने काम करने को तैयार है तब नवांकुर सस्था के कार्यकर्ता द्वारा समझाईस दिया गया तथा आगे काम करने को कहा गया फिर गॉव के अन्य लोग भी मौजूद थे । जिसमें सभी को बायोगैस एवं गोबर गैस के संबध में जानकारी दी गई। पोड़ी मे प्रस्फूटन समिति एवं नवांकुर संस्था **बैठक एवं चौपाल कार्यक्रम** के माध्यम से सभी को जैविक कृषि हेतु प्रेरित किया गया जिसमें 8–10 लोगों ने जैविक कृषि

करने हेतु तैयार हुए एवं यह भी बताया कि हमने दो साल से जैविक कृषि को अपनाया है जिसमें उपज में दोगुना बृद्धि हुई है ।

शिक्षा जागरूकता कार्यक्रम –
स्कूल चले हम अभियान कार्यक्रम

इमलिया मे समिति के साथ बैठक कर तय करते हुए महिला हिंसा को लेकर बेटी बचाओं के संदेष दिया गया है। महिलाओं के अधिकार एवं 50 प्रतिषत आरक्षरण की जारकारी दी गई । **धनवाही टोला** मे स्वास्थ्य संगोष्ठी कार्यक्रम से 40 लोग लाभंवित हुए । **धनवारा** के स्पंदन गॉव बजरवारा में कृषि कार्यक्रम 35 लोग लाभान्वित हुऐ । **बुजबुजा** मे गोबर गैस हेतु प्रेरित किया गया । **पोड़ी** मे पर्यावरण संरक्षण पर जोर हेतु गॉव /मोहल्लों में संदेष दिया गया । **भादावर** मे ऊर्जा बचत हेतु गॉव में घर घर सी0एफ0एल0 बल्ब लगायें हेतु प्रेरित किया गया । **झरेला, भजिया, मझगवां, बसाड़ी** मे भी स्वच्छता मूलक योजनाओं की जानकारी दी गई।

समिति के साथ बैठक कर कार्यक्रम को गति देने के लिए रूपरेखा बताया गया । गॉव के समिति से सदस्यों सहित रैली के माध्यम से जानकारी दी गई । घर घर सी0एफ0एल0 बल्ब होने का संदेष दिया गया ।

स्वच्छता कार्यक्रम –

2 अक्टूबर को पूरे भारत में प्रधानमंत्री जी के द्वारा गॉधी जयंती के अवसर पर स्वच्छ भारत अभियान चलाया गया । ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति सुड्डी में समिति के सदस्यों के स्वच्छता मिषन के बारे में गॉव के लोगों को जानकारी दी गई, एवं बच्चों एवं षिक्षक के साथ मिलकर स्कूल के प्रांगण में सफाई की गई ।

2 अक्टूबर से 8 अक्टूबर 2014 तक मद्य निषेध सप्ताह मनाया गया, जिसमें समिति के सदस्यों द्वारा नषा मुक्ति के लिए लोगों को प्रेरित किया गया, एवं इससे मनुष्यों को क्या – क्या हानि होती ये भी चौपाल एवं संगोष्ठी के माध्यम से बताया गया ।

09.10.2014 को ग्राम विकास प्रस्फुटन ग्राम सुड्डी में कृषि रथ का आगमन होगा, तो समिति के सदस्यो के द्वारा किसान भाइयों को इसकी जानकारी दी गई ताकि वे सब भारी संख्या में उपस्थित होकर वैज्ञानिक के द्वारा दी गई जानकरी का ज्यादा से फायदा उठा सके ।

15.102014 को नवांकुर संस्था के द्वारा ग्राम भदौरा नं. 1 के माध्यमिक शाला में हाथ धुलाई दिवस में वीडियो रिकार्डिग में सहयोग प्रदान किया गया ।

ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति भदौरा एवं नवांकुर संस्था के सहयोग समिति के सदस्यो द्वारा दीवाल लेखन एवं चौपाल के माध्यम से गॉव के लोगों को जानकारी दी गई । ग्राम विकास प्रस्फुटन समिति भदौरा एवं नवांकुर संस्था के द्वारा 14 नवम्बर को स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि श्रीमति बबिता सिंह जी एवं विषिष्ठ अतिथि के रूप में श्री बालमुकुन्द मिश्रा जी भी उपस्थित रहे । इस कार्यक्रम के आयोजन में पूर्ण रूप से षास. माध्य. शाला भदौरा नं. 1 गुरूजनों एवं छात्र छात्रों का सहयोग मिला । कार्यकम की षुरूआत में बच्चों की रैली को श्रीमति बबिता सिंह झण्डी दिखाई । बच्चों की रैली को पूरे गॉव में घुमाया गया स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत के नारे भी लगवाये गये लोगों को रैली के माध्यम से जागरूक किया गया । कार्यक्रम में निबंध प्रतियोगिता नाटक नुक्कड के माध्यम से कार्यक्रम को आगे बढाया गया । एवं लोंगो को षौचालय निर्माण के लिए प्रेरित किया गया ।

वृक्षारोपण कार्यक्रम – नवांकुर संस्था के द्वारा पेड लगाओ, जीवन बचाओ अभियान चलाया गया, एवं पेड लगवाये गये, साथ ही 25 किसानों को लगभग 500 पौधों का वितरण कर अपने घर मे वृक्ष लगाने एवं संरक्षित रखने का संदेष दिया गया ।

नवांकुर संस्था एवं प्रस्फुटन समितियों के द्वारा पंचायतीराज के बारे जानकारी गॉव वालों को दी गई, महिलाओं को सषक्त बनाने के लिए संस्था एवं समितियों के द्वारा महिलाओं के ऊपर होने वाले अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाने एवं चुनाव में पूरी तरह से सहभागिता के लिए प्रेरित किया गया । इतना ही नही महिलाओं को पंचायत चुनाव में लडने एवं पूरी तरह से सषक्त बनाने के लिए महिला सम्मेलन का आयोजन 29.12.2014 को किया गया । जिसमें महिलाओं ने बढ – चढकर हिस्सा लिया तथा चुनाव लडने एवं अपने मत का सही उपयोग करने का निष्चिय किया ।

7.4 डाबर – मधुमक्खी – मानव जीवन विकास समिति एवं हाई–टेक नेचुरल प्रोडक्ट (इण्डिया) लिमिटेड द्वारा नेषनल बी बोर्ड कृषि एवं सहकारी विभाग कृषि मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन मानव जीवन विकास समिति बिजौरी (मझगवां), जिला कटनी मे 28 और 29 जनवरी 2014 को किया जा रहा है। माननीय् कलेक्टर महोदय श्री अषोक कुमार सिंह, डिप्टी डायरेक्टर कृषि श्री जितेन्द्र कुमार सिंह, डायरेक्टर बागवानी विभाग से श्री एस. एम. पटेल, श्री निर्भय सिंह (सचिव MJVS), श्री एस0आर0 शर्मा (वैज्ञानिक के0वी0 के0), श्री प्रदीप मिश्रा (विपणन अधिकारी), श्री सभा बहादुर सिंह (वैज्ञानिक एवं प्रषिक्षक), श्री देवप्रकाष पाठक (प्रबंधन अधिकारी एवं प्रषिक्षक), श्री साधुराम शर्मा (प्रषिक्षक), श्री कुँवर पाल सिंह (प्रषिक्षक) की उपस्थिति मे दीप प्रज्जवलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया गया। कलेक्टर महोदय जी अपने उद्बोधन मे मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देने के लिए कहे है उसमे जो भी किसान की प्राथमिक खर्च आती है उसमे सहयोग देने को भी कहा गया है। मधु उत्पादन तथा बहुत सी फसलों मे परागण करना मधुमक्खियों के दो मुख्य योगदान है। मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देकर पर–परागण द्वारा फसलों की पैदावार व मधु उत्पादन बढ़ाकर किसानों व मधुमक्खी पालकों की आमदनी को बढ़ाना है।

मधुमक्खी बाक्स की उपलब्धता – 120

कटनी जिले के बड़वारा ब्लॉक के 5 गांव मे किसानों को 99 बाक्स दिये गये जो कि बाक्स मे मधुमक्खी शहद तैयार कर रही है। किसान निम्न गांव से किसान थे – बिलायतकलां, झांपी, कछारी, गझगवां, बिजौरी के किसानों को मधुपालन हेतु 331 किसानों को प्रषिक्षण देकर मधुमक्खियों के बाक्स उपलब्ध कराकर स्वरोजगार की ओर मोड़ा गया है। इसके अलावा संस्था मे ही नर्सरी एवं आंवला के प्लॉट मे 20 बाक्स रखे गये है जिस पर भी मधुमक्खी पाली गई है। इस प्रकार से कुल 119 बाक्स मे मधुमक्खी तैयार है बाकी के 1 बाक्स अभी खाली रखे हुए है। खाली बाक्स मे भी मधुमक्खी की व्यवस्था करने की तैयारी चल रही है ।

7.5 एन.सी.व्ही.टी. प्रषिक्षण – कौषल उन्नयन, रोजगारोन्मुखी प्रषिक्षण (NCVT) श्रम मंत्रालय भारत सरकार से मान्यता प्राप्त – ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों को रोजगारोन्मुखी प्रषिक्षण दिया जाता है जिसमे से कम्प्यूटर प्रषिक्षण, सिलाई प्रषिक्षण (फैषन डिजाईनिंग), बेसिक इलेक्ट्रिक, बेसिक ब्यूटि एण्ड हेयर ड्रेसिंग, टी–स्टाल वेन्डर, ड्राईवर कम्प्यून जैसे प्रषिक्षणों का आयोजन किया जा रहा हैं, जिससे ग्रामीण क्षेत्र के लोग प्रषिक्षित होकर रोजगार को प्राप्त करते हैं।

सत्र 2014–15 मे कम्प्यूटर प्रषिक्षण के दो बैच मे 55 प्रषिक्षणार्थियों प्रषिक्षण प्राप्त किये, सिलाई प्रषिक्षण (फैषन डिजाईनिंग) के एक बैच मे 20 प्रषिक्षणार्थियों ने प्रषिक्षण प्राप्त किये है, बेसिक ब्यूटि एण्ड हेयर ड्रेसिंग मे 20 प्रषिक्षणार्थियों ने प्रषिक्षण प्राप्त कर चुकी है। अतः आगे भी सत्र संचालित है।

7.6 रूरल टूरिज्म प्रोग्राम – टूरिष्ट, गांव विकास

विलेज टूरिज्म (गरिमा परियोजना) – टूरिष्ट, गांव विकास (एक सामाजिक और सांस्कृतिक अदान–प्रदान)
वर्ष 2014–15 मे 7 ग्रुप मे 50 विजिटर ने भाग लिया है।

व्यापक उद्धेष्यः– सामाजिक–सांस्कृतिक आदान–प्रदान और आर्थिक सहायता के माध्यम से लोगों के गरीबी को दूर करना।

विषिष्ट उद्धेष्य – आर्थिक सेवा लागत और ग्राम विकास निधि के रूप में ग्रामीणों को आर्थिक सहायता यात्रा लागत की कुल लागत का 8–10 प्रतिषत स्थानीय बाजार के उत्पादों, दोनों कृषि और आगंतुकों के साथ जोडने के द्वारा गैर–कृषि को बढावा देने के लिए कार्य किया जा रहा है ।

- राजनीतिक सषक्तिकरण ग्रामीणों को जुटाने और ग्रामीणों के बीच के आयोजन की प्रकिया को एक आदर्ष गॉव बनाने के लिए भी कार्य किया जा रहा है।
- समाजिक और सांस्कृतिक सीखने और ग्रामीणों और आगंतुकों के बीच सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन की बातचीत चर्चा और सांस्कृतिक आदान–प्रदान की गतिविधियों के माध्यम से साझा करने के दो तरीके हैं ग्रामीणों और आगंतुकों को बेहतर समझ है और सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाओं को दूर करने के क्रम में और मतभेद की स्वीकृति और सम्मान में वृद्धि कर सकते हैं ।

7.8 प्रदर्षनी – तिल्दा, मुम्बई

– मे कपड़े एवं जड़ी बूटी का प्रदर्षनी तिल्दा एवं मुम्बई मे आयोजित एक्जवीषन मे मानव जीवन विकास समिति द्वारा भाग लिया गया।

7.9 आपातकालीन सहायता – शैक्षणिक फण्ड, बिमारी सहायता

शैक्षणिक फण्ड सहायता – उड़ीसा, भोपाल और बिहार के 3 साथी को चाइल्ड एजूकेषन एवं सेल्फ एजूकेषन हेतु 20000/– की सहायता राषि दी गई।

बीमारी सहायता – श्योरपुर, ग्वालियर, बिहार, मध्यप्रदेष, उड़ीसा राज्य के 10 साथी को ट्रीटमेन्ट, एडवोकेसी, मैरिज के लिए 108000/– की सहयाता राषि दी गई।

7.10 कृषि विकास – (सेंटर, सन्नई, चीलघाट)

प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन– प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन की दृष्टि से भूमि प्रबन्धन, जल प्रबन्धन, स्वच्छता एवं कचरा प्रबन्धन, वर्मी कम्पोस्ट , जैविक कृषि, नर्सरी, कम्पोस्टपिट, वृक्षारोपण, जड़ीबूटी संग्रह एवं संवर्धन तथा के कार्य किये गये।

भूमि प्रबन्धन — संस्था के पास 30 एकड़ भूमि है जो चारों ओर फेसिंग तथा 1500 सागौन के पेड़ो से घिरी है। 27 एकड़ भूमि में निम्नानुसार व्यवस्था की गयी है :—

- 10 एकड़ भूमि में जैविक कृषि की जाती है, जिसमें फसलों के अनुसार गेहूँ, धान, कोदो, चना, जौ उगाया जाता है। सब्जियों में आलू, टमाटर, बैगन, बरबटी, लौकी, प्याज, हल्दी, शलजम, गाजर, मूली, खीरा, पपीता तथा अन्य मौसमी सब्जियां उगायी जाती हैं।
- वर्मी कल्चर के लिए तीन पिट क्रमषः सिंगल पिट, डबल पिट तथा 4 पिट बनवाए गए हैं। ये पिट 12.2 तथा 2.5 फिट के अनुपात में है।
- नाडेप कम्पोस्ट के लिए 5,10,15 फिट के दो पिट बनवाए गये हैं।
- 2 चीकू, 15 जामुन, 20 सिल्वर ओक, 2 महुआ के पेड़ हैं।
- 5 एकड़ भूमि में सन् 2000 में अध्यक्ष राजगोपाल पी0 व्ही0 के प्रोत्साहन पर जनसहयोग से श्रमदान कर एक एकड़ में तालाब बनाया गया तथा 150 बांस के पौधे लगवाए गए, जिनकी संख्या आज बढ़कर 10,000 हो गई है। इसके अतिरिक्त नीम, पलाष, पीपल, बेर, कनेर, सागौन तथा मोजियन के पौधे लगाए हैं जो आज पूर्ण विकसित होकर लहलहा रहे हैं।

स्वच्छता एवं कचरा प्रबन्धन :—

गाँधी जी के दैनिक कार्यक्रमों में सफाई अति आवष्यक कार्य था। उन्हीं आदर्षो का पालन करते हुए संस्था गॉवों में षिविर का आयोजन कर सफाई प्रषिक्षण देने का कार्य करती है। कचरा तथा गोबर गड्ढ़ों में डलवाकर सफाई तथा खाद बनाने की प्रक्रिया समझाई जाती है। कचरे का प्रबन्धन आज विष्व के सभी देषों में एक बड़ी समस्या है। संस्था अपने क्षेत्र के सभी गॉवों में प्रतिवर्ष सफाई अभियान चलाते है।

- संस्था अपने कार्यक्षेत्र के गॉवों में अक्टूबर के प्रथम सप्ताह में सफाई तथा कचरा प्रबन्धन प्रषिक्षण का आयोजन करती है।
- कचरे के प्रबन्धन के लिए लोगों को नाडेप पिट बनाकर उसमें कचरा डालने के लिए समझाया जाता है।

जैविक कृषि को बढ़ावा देना – जैविक कृषि को बढ़ावा देने के लिए प्रषिक्षण के माध्यम से बताया जाता है कि आपको जैविक खाद का प्रयोग करना है जिससे देखा जाता है कि शासकीय खाद के प्रयोग से कही ज्यादा उपज जैविक खाद के प्रयोग से होती है। आपको कम्पोस्ट एवं वर्मी कम्पोस्ट का खाद आसान तरीके से प्राप्त हो जायेगी जिसके माध्यम से आप अधिक से अधिक उपज प्राप्त कर सकते है। तो आपको प्रषिक्षण से जाते ही जैविक कषि को अपनाना है ।

- **सिझौरा—** जैविक कृषि को बढ़ावा देन के लिये कम्पोस्टपिट बनाया गया तथा वृक्षारोपड़ के लिये पौधों की नर्सरी तैयार की गई ।
- **बिजौरी—** संस्था के केन्द्र स्थल पर जैविक कृषि के अन्तर्गत धान और गेहूँ की खेती की गई। इसके अतिरिक्त अरबी, लौकी, आलू, प्याज, अदरक, मिर्च तथा हल्दी लगाई गई जिनका विवरण निम्नानुसार है तथा इसके अलावा वर्मीकम्पोस्ट, कम्पोस्ट, नर्सरी, वृक्षारोपड़ किया गया।

फसल उत्पादन विवरण

क्रं.	फसल	बीज	उत्पादन
1	धान	3 क्वि. 20 किलो	67 क्वि.
2	गेहूँ	7 क्वि.	22 क्वि. 63 किलो

3	सरसों	2 किलो	1 क्वि.
4	बटरी	6 किलो	1 क्वि. 40 किलो
5	चना	8 किलो	80 किलो
6	जबा	50 किलो	2 क्वि. 44 किलो
7	मिर्ची	5 ग्राम	15 किलो
8	हल्दी	5 किलो	35 किलो
9	गिलकी	50 ग्राम	42 किलो
10	बरबटी	100 ग्रा.	46 किलो
11	भिण्डी	250 ग्राम	50 किलो

वृक्षारोपण – वृक्षारोपण की दृष्टि से सागौन, खम्हेर, कटंगा बांस, ग्लिरीसीडिया, करंज, आवला, आम, कटहल, काजू, नींबू, स्वर्णलता, अमरूद, अर्जुन, केसिया सेमिया, बकायन, कचनार, मीठी नीम, नीम, पपीता, जामुन इत्यादि पौधे लगाये गये जो निम्नानुसार है –

क्रं.	प्रजाति	संख्या	क्रं.	प्रजाति	संख्या
1.	सागौन	20	**15**	अकेसिया सेमिया	5
2	खम्हेर	115	**16**	कचनार	10
3	कटंगा बांस	150	**17**	मीठी नीम	25
4	ग्लिरीसीडिया	50	**18**	नीम	10
5	करंज	200	**19**	बकायन नीम	15
6	आंवला	50	**20**	पपीता	10
7	आम	65	**21**	जामुन	10
8	कटहल	5	**22**	सहतूत	15
9	काजू	1	**23**	गुलमोहर	25
10	नींबू	10	**24**	बबूल	25
11	स्वर्णलता (क्रोटन)	15	**25**	जामुन	10
12	अमरूद	10	**26**	लिपटस	15
13	अर्जुन	25	**27**	शीषम	1
14	अंजीर	10	**28**	गुलाब	15
कुल 28 प्रजाति के 917 पौधों का रोपण किया गया					

जड़ी बूटी संग्रह एवं संवर्धन

क्रं.	प्रजाति	संख्या	क्रं.	प्रजाति	संख्या	क्रं.	प्रजाति	संख्या
1	सफेद मूसली	10	21	काटन प्लांट	1	41	धतूरा	1
2	काली मूसली	10	22	बकायन	2	42	गुगुल	1
3	अश्वगंधा	5	23	कालेश्वर	3	43	चमेली	3
4	हरजोड़	15	24	चित्रक	3	44	दमनक	1

5	सर्पगंधा	2	25	गुंजा सफेद	1	45	बज्रकंद	25
6	गुणमार	5	26	गुंजा लाल	15	46	अंजीर	5
7	चक्रमर्द	15	27	गुलवकावली	15	47	मिनी आंवला	2
8	ध्रतकुमारी	250	28	शंखपुष्पी	100	48	नीलगिरि	60
9	पारस पीपर	2	29	आंवला	150	49	जासून	25
10	शीकाकाई	10	30	बहेड़ा	150	50	करबीर	10
11	अनार	2	31	हड़र	5	51	धाय	2
12	पारीजात	1	32	पपीता	50	52	नागवला	5
13	रामकंद	25	33	कालमेघ	10	53	वला	5
14	लाजवंती	15	34	अडूसा (वासा)	10	54	लेमनग्रास	150
15	लेड़ी पीपर	10	35	नीम	5	55	पलास	15
16	सुदर्शन	10	36	सतावर	1	56	आक	3
17	केशव कंद	10	37	सेमलकंद	4	57	स्वर्ण भूषण	5
18	करंज	100	38	निर्गुंडी	5	58	कलिहारी	5
19	बेल	47545	39	निषोध	5693	59	षिवनाक	10165
20	सूर्यमुखी	5000	40	भुई आंवला	डेढ़ एकड मे	60	नाईजन	1 किलो
टोटल – 60 प्रजाति की 69754 पौधे रोपित किये गये								

दुर्लभ जड़ीबूटी कलिहारी जिसे बचाने का प्रयास किया जा रहा है। इसका उपयोग यदि कील या धातु जैसे सुई पैर में चुभ जाता है तो कलिहारी कन्द को घिसकर लगा देने से कील या सुई बाहर निकल आती है एवं दर्द दूर हो हो जाता है तथा सुखपूर्वक प्रसव होने में भी सहायक होता है।

7.11 चीलघाट– किसानों को सिंचाई सुविधा के लिये 2 मोटर पम्प पाइप के साथ दिये गये तथा 50 एकड़ भमि की मेढ़बन्दी करवाई गई जिसके कारण कृषि उत्पादन में 50 प्रतिषत वृद्धि हुई। किसान बेहतर तरीके से जैविक खेती करने मे समर्थ है। जमीन की उत्पादन क्षमता मे वृद्धि हुई है लोगों का आर्थिक विकास हुआ है।

7.12 सन्नई – सिंचाई तथा पेय जल के लिये निर्माणाधीन कुंए का खनन कार्य पूरा किया गया जिसकी सहायता से वहां के लोग दो फसली खेती करने में समर्थ हुए। लोगों का विकास ही नही बल्कि जमीन की उत्पादन क्षमता मे भी बढ़ोत्तरी हुई है।

8. – अन्य गतिविधियां :–

8.1 – इकोनॉमिक गतिविधियां – आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र मे हाथ से कपड़ा बनाने का काम किया जा रहा है । इससे लोगों को उद्योगों से जोड़ा गया तथा बाजार उपलब्ध कराया गया जिससे बनाये जा रहे कपड़ा आसानी से बेचा जा सके। मानव जीवन विकास समिति ने विगत वर्षो से लोगों को आजीविका से जोड़ने

का प्रयास कर रही है । लोगों को घर पर रोजगार उपलब्ध कराने का प्रयास संस्था द्वारा किया जा रहा है।

8.2 – परस्पर सहयोग समूह एवं स्वसहायता समूह की जानकारी :– कार्यक्षेत्र के गांव –

राजस्थान के उदयपुर, जोधपुर। उमरिया के मरईकलां, गोबरताल। रायसेन के रेहती, धुबघटा। उत्ताखण्ड के किम्मु, कलपटा, गोविना, कनषेड, हरकोट तरसल गांव है।

स्वसहायता समूह की जानकारी –

राजस्थान मे लीला धेरोधा विलेज ग्रुप, मरईकलां मे एकता महिला समूह, प्रतिमा समूह। रायसेन मे सफलता समूह रेहाती। उत्तराखण्ड मे कलपटा विलेज ग्रुप।

इस प्रकार से 5 समूहों के बैंक में खाते खुलवाये गये खाते मे समूह के 329646/– की राषि व्यवस्थित है। परियोजना क्षेत्र के ग्रामों मे समुदाय के आर्थिक सषक्तिकरण के तहत संगठनात्मक गतिविधि के साथ परस्पर सहयोग समूह एवं स्वसहायता समूह का गठन कर बचत और बैंको से जोड़कर सरकारी योजनाओं से जोड़ने का कार्य किया जा रहा है। साथ ही ग्राम स्तर पर साहूकारो से मुक्ति मिली है। समूह के सदस्यों के अलावा अन्य सदस्यों को भी आसानी से ऋण प्राप्त करने मे सुविधा हो रही हैं।

रचनात्मक कार्य – स्व–सहायता समूहों के माध्यम से संस्था ने रचनात्मक कार्यो द्वारा लोगों को आजीविका के साधन उपलब्ध करवाने का प्रयास किया तथा कृषि में सहायता कर खाद्याान्य सुरक्षा बढ़ाने में सहयोग किया। स्व–सहायता समूहो के माध्यम से दोना पत्तल बनाने का प्रषिक्षण दिया जाता है जिससे समूहों द्वारा जंगल से पत्तों की व्यवस्था कर मषीन से आसानी से दोना और पत्तल का निर्माण किया जा रहा है जिससे बहुतों की आजीविका इसी स`चल रहा है।

8.3 आर्थिक कार्यक्रम – मानव जीवन विकास समिति मुख्य रूप से महाकौषल क्षेत्र के कटनी, डिण्डौरी, मण्डला, बालाघाट, सघन रूप से उमरिया एवं रायसेन में आंषिक कार्यरत है । समिति अपने 22 फिल्ड स्टाफ के साथ 230 गावों में काम कर रही है । वर्तमान समय में भूमि अधिकार एवं पंचायतीराज के साथ–साथ विलेज टूरिज्म आदि प्रोग्रामों के साथ काम को आगे बढाने में लगी है । गॉव चले अभियान के पहले या बाद में किय जा रहे कार्यो पर ज्यादा से ज्यादा आर्थिक गतिविधियों को मजबूत करने व नए कार्यों के संचालन के लिए तत्पर है, समिति के फिल्ड में प्रमुख रूप से निम्न प्रकार से कार्य किये जा रहे है –

भूमि अधिकार–

वनभूमि – समिति के सम्पूर्ण गावों में वन अधिकार अधिनियम के तहत 130 गावों के 1455 लोगों को 2610 एकड़ जमीन का पटटा प्राप्त हुआ जो आज के बाजार मूल्य पर यदि 50 हजार रूपये प्रति एकड़ ऑकते हैं तो 13,05,000,00 का मालिकाना हक सीधे उन आदिवासी परिवारों को मिला जो लम्बे समय से भूमिहीन की श्रेणी में आते थे । सिर्फ इसी कार्य में लगे कार्यकर्ताओं पर जो व्यय किया गया पिछले 10 वर्षों में तो 22 कार्यकर्ताओं पर 3000 रू. प्रतिमाह भी ऑकते है तो 120 माह में 7,9,20,000 स्कालरषीप में व उनकी क्षमता वृद्धि पर लगाये तो इन्हीं कार्यकर्ताओं की संख्या पर 20 हजार रू. प्रति कार्यकर्ता व्यय

किये तो 4,40,000 व्यय होता है । कुल 83,60,000 रू. व्यय हुए इस ऑकडें में 6.40 प्रतिषत ही खर्च हुआ कुल इनकम में उत्पादन को भी जोड़े तो 2610 एकड़ में कृषि उत्पादन कई हजारों क्विंटल में आता है यदि एक एकड़ का उत्पादन 5 क्विंटल भी होता है तो 2610 एकड़ जमीन में 13050 क्विंटल एक फसल पर दोनों सीजनों का 26100 क्विंटल अनाज का उत्पादन जो वर्तमान बाजार भाव में यदि 800 रू. प्रति क्विंटल भी आके तो 2,08,80,00 रू. की वार्षिक आमदनी की स्थायी रूप से आना प्रारम्भ हुई । इसके अलावा इन गावों में पलायन की स्थिति कम हई 8 माह से 10–11 की खाद्य सुरक्षा में बढोत्तरी हुई, आत्मसम्मान बढा, सुपोषण व षिक्षा के स्तर में सुधार ये है सामाजिक मुददो पर हक करने की संभावना राजनैतिक रूप से ग्रामसभाओं में भागीदारी से ही इतने लोगों को वन अधिकार के पटटे दिलाने में सफलता मिली है ।

राजस्व भूमि – राजस्व भूमि की ओर एक नजर से देखे तो यह तो खेती करने लायक जमीन नहीं क्यों की इसका रकवा डिसमिल में दिया गया है । 331 लोगों में यह जमीन का ऑकडा 65 एकड होता वनभूमि के वनिस्पत इस जमीन की कीमत ज्यादा हो सकती है क्योंकि यह घर आवास की जमीन है । यदि भौगोलिक क्षेत्र के हिसाब से भी मूल्यांकन करेंगे तो 1 लाख रूपये प्रति एकड भी आके तो 65 लाख रूपये की होती है, जमीन न बाजार भाव निकालने के लिए न बेचने के लिए परन्तु अपनी संतुष्टि के लिए यह रिकार्ड तैयार किया गया है, परन्तु इसके अलावा भी कई उपलब्धियॉ है जो देखी नहीं जा सकती सिर्फ महसूस करें अहसास कराये । जिससे आवास का पटटा मिलना एक सामाजिक सम्मान है । अपना घर है अपने तरीके से सजाने सॅवारने की तमन्ना आ जाती है इन सबसे ऊपर स्थायीपन ।

सामुदायिक पटटा– उक्त चार जिलों में से अभी तक जानकारी के अनुसार डिण्डौरी जिले में ही सिर्फ सामुदायिक पटटा प्राप्त हुआ जो 8 गॉव के 1550 एकड जमीन का सामुदायिक अधिकार दिलाकर गॉवों को स्वाबलम्बी बनाने की पहल की जा सकी है जो अपने में एक बडी सफलता है ।

निर्भय सिंह

सचिव

मानव जीवन विकास समिति

संकलन – रामकिषोर रैदास